सुसमाचार

अध्याय 1

सुसमाचारों का परिचय

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
साहित्यिक शैली 1
शैली 2
ऐतिहासिक विवरण 2
यूनानी-रोमी जीवनकथा 3
बाइबल-संबंधी ऐतिहासिक विवरण 5
विश्वसनीयता 6
पहुँच 6
स्पष्टवादिता 7
पुष्टिकरण 8
प्रशिक्षण 9
धर्मवैज्ञानिक बोध 10
पवित्र आत्मा 10
कलीसिया में महत्व 11
संयोजन 11
समानताएं 12
संयोजन के सिद्धांत 14
निश्चितता 14
प्रमाणिकता 15
विश्वासयोग्य लेखक 16
प्रेरितिक अनुमोदन 16
कलीसिया के गवाह 16
एकता 17
समान कहानी 18
यीशु 19
प्रमाण 19
शब्दावली 20
चरण 21
भिन्नता 23
प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ 23
घटनाक्रम 23

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विलोपन 24
भिन्न घटनाएँ.. 24
भिन्न कथन 25
भिन्न प्रभाव 25
मत्ती में यीशु कौन है? 26
मरकुस में यीशु कौन है? 28
लूका में यीशु कौन है? 30
यूहन्ना में यीशु कौन है? 32
उपसंहार 34

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सुसमाचार

अध्याय एक

सुसमाचारों का परिचय

परिचय

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि हमारे जीवन में समाचारों का कितना महत्व है? हमारे चारों ओर के संसार के बारे में जो महत्वपूर्ण जानकारी हम प्राप्त करते हैं वह हमारे विचारों, हमारे सिद्धांतों, हमारी योजनाओं और हमारे जीवन के कई अन्य पहलुओं को प्रभावित करती है। कभी-कभी समाचार की घटनाएँ इतनी महत्वपूर्ण होती हैं कि वे हमारे सारे दृष्टिकोण को ही बदल देती हैं।

जब हम सोच-विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि बाइबल भी समाचारों की कहानियों के एक संग्रह के समान ही है। यह सम्पूर्ण इतिहास के परमेश्वर के लोगों से संबंधित सब प्रकार के अच्छे और बुरे समाचारों का ब्यौरा देती है। और जब हम इन कहानियों को पढ़ते हैं तो वे हमें कई रूपों में प्रभावित करती हैं और बदलती हैं।

परन्तु बिना किसी संदेह के, जो सर्वोत्तम समाचार पवित्रशास्त्र हमें देता है वह सूचनाओं का ऐसा संग्रह है जिन्हें हम सामान्यतः "शुभ सन्देश" या "सुसमाचार" कहते हैं। वे हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता के व्यक्तित्व और कार्य के जीवन परिवर्तित कर देने वाले विवरण हैं।

यह हमारी श्रृंखला सुसमाचार का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना द्वारा यीशु मसीह के जीवन और सेवकाई के बारे में लिखी पुस्तकों की जांच करेंगे। इस अध्याय में, जिसे हमने "सुसमाचारों का परिचय" नाम दिया है, हम इन पुस्तकों की आरंभिक जानकारी प्राप्त करेंगे जो हमें उन्हें और अधिक स्पष्टता के साथ समझने और वर्तमान में उन्हें हमारे जीवन में और अधिक मजबूती से लागू करने में सहायता करेगी।

सुसमाचारों के हमारे परिचय में हम चार महत्वपूर्ण विषयों को देखेंगे। पहला, हम उनकी साहित्यिक शैली के आधार पर सुसमाचारों को जांचेंगे। दूसरा, हम कलीसिया में उनकी स्थिति या स्तर को देखेंगे। तीसरा, हम सुसमाचारों के बीच की एकता पर ध्यान देंगे। और चौथा, हम उस भिन्नता की जांच करेंगे जो उन्हें एक-दूसरे से अलग करती है। आइए, इन पुस्तकों की साहित्यिक शैली को देखने के द्वारा आरंभ करें।

साहित्यिक शैली

सामान्यतः, जब हम साहित्य को पढ़ते हैं, तो हमें कुछ अंदेशा रहता है कि हम किस प्रकार का साहित्य पढ़ रहे हैं, और वही हमारी अगुवाई करता है कि इसे कैसे पढ़ा जाए और हम इससे क्या अपेक्षा रखते हैं। उदाहरण के तौर पर यदि आप ऐतिहासिक उपन्यास पढ़ते हैं तो आप यह अपेक्षा नहीं करते कि यह एक तथ्यात्मक इतिहास है, और इससे आप अपने मार्ग से नहीं भटकते। और यदि आप लघु कहानियों की पुस्तक पढ़ते हैं तो आप जानते हैं कि यह एक निरंतर लम्बा चलने वाला उपन्यास नहीं है, आप उसे फिर वैसे नहीं पढ़ते। अतः, हमें कुछ जानकारी अवश्य होनी चाहिए कि हम किस प्रकार का साहित्य पढ़ रहे हैं और वह साहित्य किस प्रकार की परंपराओं को संचालित कर रहा है।

डॉ. रिचर्ड बौखम

हम दो दृष्टिकोणों से सुसमाचारों की साहित्यिक शैली की जांच करेंगे। पहला, हम सुसमाचारों की शैली, अर्थात् उनकी महत्वपूर्ण साहित्यिक विशेषताओं पर ध्यान देंगे, और दूसरा हम उनकी ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर चर्चा करेंगे। आइए, पहले हम चारों सुसमाचारों की शैली पर ध्यान दें।

शैली

सामान्य शब्दों में, शैली साहित्य की एक श्रेणी या प्रकार है। शैलियों को उनके साहित्यिक रूप और कार्य के आधार पर अलग-अलग करके देखा जाता है, जैसे कि उनके विवरण की पद्धति, और अलंकृत भाषा का उनका प्रयोग।

बाइबल में अनेक भिन्न शैलियाँ पाई जाती हैं। उदाहरण के तौर पर, ऐतिहासिक विवरण भी हैं, जैसे कि पुराने नियम में दाऊद के बारे में कहानियां। अन्य शैली है काव्य, जैसे की भजन संहिता। पत्रियाँ अन्य शैली हैं, और ऐसे ही भविष्यवाणी इत्यादि। साहित्य की प्रत्येक शैली की अपनी परंपराएँ हैं, अभिव्यक्त करने के अपने तरीके हैं। इसीलिए हमारे लिए सुसमाचारों की शैली को समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है। तब यह समझना और सरल हो जाता है कि वे क्या सिखाते हैं, यदि हम पहले यह समझ लें कि वे कैसे सिखाते हैं।

यह समझने के लिए कि सुसमाचार कैसे अपनी बातों को दर्शाते हैं, हम तीन चरणों में उनकी शैली को पहचानेंगे और उनका वर्णन करेंगे। पहला, हम सुसमाचारों को ऐतिहासिक विवरण के रूप में पहचानते हुए कुछ सामान्य कथनों को कहेंगे। दूसरा, हम उनकी तुलना एक विशेष प्रकार के ऐतिहासिक विवरण से करेंगे, जैसे कि यूनानी-रोमी जीवनकथा। तीसरा, हम सुसमाचारों की तुलना बाइबलीय ऐतिहासिक विवरण से करेंगे, जैसे कि पुराने नियम के इतिहास। आइए, ऐतिहासिक विवरण की सामान्य श्रेणी के साथ आरंभ करे।

ऐतिहासिक विवरण

ऐतिहासिक विवरण ऐसे लोगों की कहानियां है जो अतीत में रहे, और उनके उन कार्यों और घटनाओं की कहानियां हैं जो उनके समय में घटित हुईं। आधारभूत स्तर पर, सुसमाचार ऐतिहासिक विवरण हैं क्योंकि वे यीशु के जीवन और उसकी सेवकाई का वर्णन करते हैं।

> बाइबल के अधिकांश विवरण और सुसमाचार जानबूझ कर विवरणात्मक रूप में लिखे गए हैं क्योंकि हम कहानी के लोग हैं। जब हम किसी महान कहानी में सहभागी होते हैं तो हम स्वाभाविक रूप से सहभागी हो जाते हैं, न केवल मानसिक रूप से बल्कि हमारे मनोभावों और भौतिक संवेदनाओं में भी। और कहानियां हमें दूसरों के अनुभवों के माध्यम से स्थानापन्न रूप में जीने के योग्य बनाती हैं। यह कहानी की सामर्थ का विशाल हिस्सा है। और जब सुसमाचार हमारे समक्ष साहित्य के रूप में, ऐतिहासिक विवरण के रूप में आता है तो यह हमें केवल यीशु के बारे में सत्यों के सीखने के ही नहीं बल्कि स्वयं उसका अनुभव करने, परमेश्वर के राज्य को और क्रियान्वित रूप में स्वर्ग के राज्य को आता हुआ देखने, यीशु के तरस को देखने, यीशु दीन लोगों से प्यार करता है इसे केवल एक कथन के रूप में ही नहीं बल्कि उसे ऐसी कहानियां बताते हुए और उन कहानियों को जीवन में लागू करते हुए देखने के योग्य बनाता है जहाँ दीन लोगों को उठाया जाता है और घमंडियों को नीचा किया जाता है। और कहानियां एवं

सुसमाचारों के साहित्य की शैली हमें शिष्यों के समान यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने के योग्य बनाती हैं। ऐतिहासिक विवरण के रूप में हमें कहानियों का दिया जाना इस रीति से हमें यीशु का अनुसरण करने के योग्य बनाता है : उनकी असफलताओं, और सफलताओं में उन चरित्रों के साथ अपने को पहचानना, और हमारी अपनी कहानी, जो की हमारा जीवन है, में विश्वासयोग्यता के साथ जीने का प्रयास करना।

डॉ. जोनाथन पेनिंगटन

प्राचीन संसार के लौकिक लेखनों में ऐतिहासिक विवरण विशेष रूप से तीन मुख्य भागों में विकसित हुए। विवरण का आरंभ चरित्रों का परिचय करवाता है और चरित्रों द्वारा प्राप्त किये जाने वाले लक्ष्यों को स्थापित करता है। मध्य भाग उनके लक्ष्यों को पूरा करने में चरित्रों की सफलता के समक्ष चुनौतियों और बाधाओं को प्रस्तुत करता है। अंतिम भाग घटनाओं के वर्णन का निष्कर्ष है। यह सामान्यतः हमें दिखाता है कि किस प्रकार चरित्रों ने लक्ष्यों को पूरा किया या नहीं किया।

सुसमाचार इसी आधारभूत रूपरेखा का अनुसरण करते हैं। प्रत्येक सुसमाचार यीशु को कहानी के मुख्य चरित्र के रूप में दर्शाते हुए आरंभ होता है, और परमेश्वर के राज्य के माध्यम से उद्धार को लाने के लक्ष्य का वर्णन करता है। प्रत्येक सुसमाचार यीशु के अधिकार और कार्य के समक्ष चुनौतियों को रखते हुए आगे बढ़ता है। और प्रत्येक सुसमाचार यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के परिणाम का वर्णन करते हुए समाप्त होता है। इन समानताओं के कारण लगभग सब लोग सहमत होते हैं कि ऐतिहासिक वर्णन सुसमाचारों की महत्वपूर्ण शैली है।

यूनानी-रोमी जीवनकथा

ऐतिहासिक विवरण की विशाल श्रेणी के भीतर कुछ व्याख्याकारों ने सुझाव दिया है कि सुसमाचार विवरणों के एक समूह का हिस्सा हैं जिसे यूनानी-रोमी जीवनकथा कहते हैं।

हम सुसमाचारों और यूनानी जीवनकथा के बीच तुलनाओं पर दो चरणों में ध्यान देंगे। पहला, हम उनके बीच की समानताओं को देखेंगे। और दूसरा, हम उनके बीच में पाई जाने वाली कुछ विपरीतताओं को देखेंगे। आइए, उनकी समानताओं के साथ आरंभ करें।

समानताएं। जीवनकथाओं में महान अगुवों के जीवनों का वर्णन किया गया था। यद्यपि उनमें अनेक भिन्न चरित्र और कहानियां पाई जाती थीं, फिर भी यूनानी-रोमी जीवनकथाओं ने इन चरित्रों और कहानियों का वर्णन इस प्रकार से किया जिसने उस विशेष अगुवे को मुख्य रूप से दर्शाया। उन्होंने अगुवे के विचारों का बचाव किया और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक उसके कार्यों की जानकारी को निरंतर आगे बढाया। और सुसमाचार इन रूपों में प्राचीन जीवनकथाओं के समान थे।

हम इस बात में भी कुछ प्राचीन जीवनकथाओं से समानता को देखते हैं कि मत्ती और लूका जन्म के विवरणों को शामिल करते हैं, और सभी चारों सुसमाचार यीशु की मृत्यु का वर्णन भी करते हैं। सुसमाचार इस बात में भी प्राचीन जीवनकथाओं की परंपराओं का अनुसरण करते हैं जब वे यीशु के जीवन की घटनाओं को दर्शाते हैं। अन्य प्राचीन जीवनकथाकारों के समान, सुसमाचार के लेखकों ने कई रूपों में यीशु के जन्म और मृत्यु के बीच की घटनाओं का वर्णन किया। कभी-कभी उन्होंने समय के अनुसार घटनाओं को व्यवस्थित किया। और कभी-कभी उन्होंने विषय के अनुसार घटनाओं को व्यवस्थित किया। और कभी-कभी तो उन्होंने भौगोलिक रूप से उन्हें व्यवस्थित किया।

मैं सोचता हूँ कि आरंभ में पहले यह अनुभव करना या पहचानना महत्वपूर्ण है कि सुसमाचार सामान्यतः समयानुसार व्यवस्थित हैं। उदाहरण के तौर पर, वे यूहन्ना

> बपतिस्मादाता द्वारा दिए जाने वाले बपतिस्मों के साथ आरंभ होते हैं, और तब हम यीशु का बपतिस्मा होते देखते हैं, तब आप यीशु की सेवकाई को पाते हैं, फिर उसके पकड़वाए जाने, मुकद्दमें, क्रूसीकरण और पुनरुत्थान को। और सम्पूर्ण भाव में, यह एक समयानुसार क्रम है। इसके साथ-साथ ऐसे कई स्थान हैं, यदि आप दो सुसमाचारों की तुलना करेंगे तो पाएंगे कि ऐसी घटनाएँ या शब्द हैं जिन्हें समयानुसार भिन्न क्रम में रखा गया है। मैं सोचता हूँ कि समस्या केवल वहीँ पैदा होती है जब हम सुसमाचारों को इस इरादे के साथ पढ़ते हैं कि हमें एक ही रूप में संक्षिप्त और समयानुसार क्रम में बातों को बताएं। परन्तु अधिकांश लेखक और अधिकांश प्रकार के विवरण एक लेखक को अनुमति देते हैं कि वे अपने लेखन को ऐसे क्रम में रखे जो समयानुसार न हो। उदाहरण के तौर पर, प्रायः हम तार्किक क्रम को देखते हैं, या हम विषयों के आधार पर क्रम को देखते हैं। आरंभिक मसीही. जैसे कि चौथी सदी के मसीही इतिहासकार और बिशप एसूबियस ने लिखा कि सुसमाचारों के क्रम में भिन्नता पहले से ही जानी पहचानी थी, और आरंभिक मसीहियों को इससे कोई समस्या नहीं थी क्योंकि उन्होंने कल्पना नहीं की थी कि लेखकों ने कड़े समयानुसार क्रम को चाहा था।
>
> डॉ. डेविड रेडेलिंग्स

यूनानी-रोमी जीवनकथाओं की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने अतीत की घटनाओं को ऐतिहासिक वास्तविकताओं के रूप में जोड़ा ताकि अतीत वर्तमान से भिन्न हो। जीवनकथाएँ अद्वितीय, बेजोड़ जीवनों और विशेष, ऐतिहासिक लोगों के योगदानों को लिखने पर केन्द्रित थीं।

सामान्यतः प्राचीन जीवनकथाकारों ने सटीक मौखिक और लिखित अभिलेखों का शोध करने और उन्हें बनाये रखने का प्रयास किया। सम्मानित जीवनी-लेखक प्लूटार्क द्वारा दिए गए उदाहरण को देखें, जिसका जीवनकाल 46-120 ईस्वी के बीच था। प्लूटार्क एक लौकिक यूनानी इतिहासकार था जिसने लगभग 70 ईस्वी के दौरान लेखन कार्य किया था, जो कि वही समय था जब सुसमाचार लिखे गए थे। उसने अपनी कृति सिसरो का जीवन को सिसरो के माता-पिता की पृष्ठभूमि के साथ आरंभ किया था, परन्तु सिसरो के पिता के बारे में जानकारी की सीमितताओं को माना था।

> सामान्यतः ऐसा कहा जाता है कि सिसरो की माता हेल्विया का जन्म अच्छे घर में हुआ और उसने एक अच्छा जीवन जिया; परन्तु उसके पिता के बारे दो अलग-अलग बातों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कहा गया है। कुछ लोग कहते हैं कि वह एक धोबी का पुत्र था और उसे वही काम सिखाया गया था, अन्य लोग उसके परिवार के उद्गम को वोलस्कियन के उस प्रख्यात राजा तुल्लुस अत्तिउस के परिवार से जोड़ते हैं जिसने रोमियों के विरुद्ध युद्ध लड़ा और सम्मान प्राप्त किया।

सिसरो के माता-पिता के बारे में अनुमान से वास्तविकता को अलग करने में प्लूटार्क की सावधानी दर्शाती है कि कुछ प्राचीन जीवनी-लेखकों ने ऐतिहासिक विवरणों पर ध्यान दिया था और उनकी रुचि यथार्थता में थी। सुसमाचार इस बात के प्रमाण देते हैं कि उनके लेखक भी उतने ही सचेत थे जितना प्लूटार्क अपने लेखन में था।

विशालतः, यह कहना ठीक होगा कि सुसमाचार वे ऐतिहासिक विवरण हैं जिन्हें ऐसे समय लिखा गया जब जीवनी-संबंधी साहित्य यूनानी-रोमी संसार में लोकप्रिय था। जीवनकथाओं के प्रति इस विशाल खुलेपन ने शायद सुसमाचार लेखकों को उनके कार्य में उत्साहित किया, और इन जीवनकथाओं की कुछ औपचारिक परंपराओं को ग्रहण करने के लिए तैयार किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परन्तु सुसमाचारों और यूनानी-रोमी जीवनकथाओं के बीच समानताओं के बावजूद उनमें महत्वपूर्ण असमानताएं भी पाई जाती हैं।

असमानताएं। यद्यपि हम कई असमानताओं का उल्लेख कर सकते हैं, परन्तु हम केवल तीन असमानताओं पर ध्यान देंगे। पहली, सुसमाचार यूनानी-रोमी जीवनकथाओं से उनके अभीष्ट श्रोताओं के आधार पर भिन्न हैं।

प्राचीन जीवनकथाओं का लक्ष्य विस्तृत श्रोता थे, वहीँ सुसमाचार आरंभिक मसीही कलीसिया के विशिष्ट श्रोताओं के लिए लिखे गए थे। यद्यपि, वे जीवनकथाओं की कुछ विशेषताओं को दर्शाते हैं, परन्तु उनका मुख्य लक्ष्य कलीसिया के भीतर ही धार्मिक प्रयोग के लिए था। इस विशिष्ट प्रारूप की पुष्टि इस बात से होती है कि वे बहुत ही शीघ्र कलीसिया की शिक्षा और आराधना में नियमित रूप से प्रयोग किये जाने लगे।

दूसरा, सुसमाचार अपने महत्व में भी जीवनकथाओं से भिन्न हैं। यूनानी-रोमी जीवनकथाएं अपने मुख्य चरित्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं को महत्व देती हैं, और इसके द्वारा दूसरों को उनके जीवन और व्यक्तित्वों का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करती हैं। यद्यपि ऐसे कई रूप हैं जिनमें यीशु का जीवन हमारे लिए एक उदाहरण है, परन्तु सुसमाचारों का बहुत ही भिन्न केंद्र है। वे यीशु की अद्वितीयता पर बल देते हैं। वे उसे इस प्रकार से दर्शाते हैं कि वह परमेश्वर को प्रकट करता है और अपने लोगों को छुड़ाता है जैसा कोई और नहीं कर सकता। इसीलिए, सुसमाचारों का अधिकांश विवरण उसके जीवन के अंतिम सप्ताह के बारे में बताता है- अर्थात् दुःखभोग के सप्ताह के बारे में।

तीसरा, सुसमाचार और प्राचीन जीवनकथाएं भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को प्रस्तुत करते हैं। जीवनकथाओं ने यूनानी-रोमी रूचियों, सिद्धांतों, और जीवन शैली की अभिव्यक्ति प्रदान की थी। सुसमाचार यहूदी संस्कृति और विशेषकर पुराने नियम के द्वारा अधिक प्रभावित थे। यह बात लूका के सुसमाचार पर भी लागू होती है, जो कि यूनानी संस्कृति और विचारधारा से सबसे अधिक प्रभावित था।

निष्कर्ष में कहें तो, सुसमाचारों और यूनानी-रोमी जीवनकथाओं में महत्वपूर्ण समानताएं पाई जाती हैं। और ये समानताएं सुसमाचारों के अर्थ पर प्रकाश डाल सकती हैं। परन्तु उनके बीच पाए जाने वाली असमानताओं के प्रकाश में, यह बात साफ़ है कि सुसमाचार यूनानी-रोमी जीवनकथा की शैली में स्पष्ट रूप से उपयुक्त नहीं बैठते।

हमने यहाँ पर सामान्य ऐतिहासिक विवरण और यूनानी-रोमी जीवनकथा के आधार पर सुसमाचारों पर ध्यान दे लिया है, इसलिए अब हम बाइबल-संबंधी ऐतिहासिक विवरण की शैली के साथ उनकी तुलना करने के लिए तैयार हैं।

बाइबल-संबंधी ऐतिहासिक विवरण

सुसमाचार विशिष्ट ऐतिहासिक विवरणों और यूनानी-रोमी जीवनकथाओं के जितने समान हैं, वैसे ही वे पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के भी बहुत समान हैं। और इससे हमें चकित नहीं होना चाहिए। आखिरकार, पुराने नियम के विवरण सुसमाचार के लेखकों के पवित्रशास्त्र के भाग थे। सुसमाचार के प्रत्येक लेखक के द्वारा पुराने नियम से लिए गए अनेक उद्धृणों से हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि वे पुराने नियम को बहुत अच्छे तरीके से जानते थे- शायद आज के मसीही से बहुत बेहतर रूप में। और पुराने नियम के उनके ज्ञान ने इस बात को प्रभावित किया कि वे अपने कार्य या लेखन को किस प्रकार करें।

इससे बढ़कर, सुसमाचार लेखकों और पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के लेखकों के लेखन का समान उद्देश्य था, अर्थात् परमेश्वर की वाचा को उसके लोगों के समक्ष स्पष्ट करना और उसका बचाव करना। उदाहरण के तौर पर, निर्गमन 1-19 जैसे ऐतिहासिक विवरण निर्गमन 20-24 में पाई जाने वाली मूसा की वाचा के ऐतिहासिक आधार को प्रदान करते हैं।

यह उद्देश्य निर्गमन 24:8 जैसे अध्यायों में स्पष्ट है, जहाँ पर हम इस विवरण को पाते हैं :

> तब मूसा ने लहू को ले कर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, देखो, यह उस वाचा का लहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बान्धी है। (निर्गमन 24:8)

बाइबल के अन्य विवरण, जैसे कि यहोशू 1-23, यहोशू 24 में पाए जाने वाले वाचा के नवीनीकरण के आधार को प्रदान करते हैं। और न्यायियों एवं 1 शमूएल की पुस्तकों के विवरण 2 शमूएल 7 में दाऊद की वाचा के ऐतिहासिक आधार हैं। इसी प्रकार, सुसमाचार उस नई वाचा का ऐतिहासिक आधार प्रदान करते हैं जिसकी स्थापना यीशु ने की थी।

सुनिए लूका 22:20 में लूका का विवरण किस प्रकार निर्गमन 24:8 के वर्णन के समान सुनाई देता है जिसे हमने अभी पढ़ा है :

> इसी रीति से (यीशु) ने बियारी के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया कि यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है, नई वाचा है। (लूका 22:20)

सारांश में, जब हम सुसमाचारों की तुलना साहित्य की अन्य ज्ञात शैलियों से करते हैं, तो पाते हैं कि वे बाइबल के ऐतिहासिक विवरणों के बहुत अधिक समान हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे हर रूप में बाइबल के अन्य ऐतिहासिक विवरणों के बिलकुल समान हैं। अवश्य वे यूनानी-रोमी जीवनकथाओं से काफी बातों को लेते हैं। इस भाव में, हम यह कह सकते हैं कि सुसमाचार बाइबल के नए प्रकार के ऐतिहासिक विवरण हैं। अतः, जब हम उन्हें पढ़ते हैं तो सुसमचारों को मुख्य रूप से बाइबल-संबंधी ऐतिहासिक विवरणों के रूप में देखना सहायता करेगा। परन्तु हमें यीशु पर उनके जीवनकथा-संबंधी महत्व को भी देखना चाहिए और उसी के संबंध में उनके अन्य चरित्रों की व्याख्या करनी चाहिए।

सुसमाचारों की शैली को देखने के बाद, हम यीशु के बारे में ऐतिहासिक वर्णनों के रूप में सुसमाचारों की विश्वसनीयता के प्रश्न की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

विश्वसनीयता

सम्पूर्ण इतिहास में विश्वसनीय इतिहासकारों और अविश्वसनीय इतिहासकारों के बीच, विश्वसनीय स्त्रोतों और अविश्वसनीय स्त्रोतों के बीच लगातार अन्तर को देखा गया है। हमारे लिए प्रश्न यह है : क्या चारों सुसमाचारों के लेखकों ने यीशु के विश्वसनीय या अविश्वसनीय विवरणों को लिखा है? जहाँ हमारे समय के मानदंड उन मानदंडों के समान नहीं है जिनका अनुसरण उन्होंने किया था, वहीं ऐसे अनेक प्रमाण हैं कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के पास यीशु के बारे में विश्वसनीय विवरण लिखने के स्त्रोत और प्रेरणा दोनों थे।

यद्यपि ऐसे अनेक तरीके हैं जिनमें हम प्रमाणित कर सकते हैं कि सुसमाचार यीशु के जीवन के विश्वसनीय विवरण हैं, परन्तु हम केवल छः प्रमाणों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

पहुँच

पहला, सुसमाचार लेखकों के पास उनके द्वारा लिखी घटनाओं के विवरणों तक पहुँच थी। आज के समय के समान, प्राचीन संसार भी विश्वसनीय इतिहासकारों से अपेक्षा रखता था कि उनके पास उनके विषय से जुडी अनेक बातों तक पहुँच हो।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रोमी इतिहासकार प्लूटार्क के बारे में एक बार पुनः सोचें। देमोस्थेनेस का जीवन नामक कृति में अपनी आरंभिक टिप्पणियों में उसने इन सामान्य सांस्कृतिक अपेक्षाओं को रखा कि किस प्रकार एक इतिहासकार को अपना लेखन कार्य करना चाहिए :

> यदि कोई व्यक्ति इतिहास लिखना चाहता है... तो यह सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि... उसके पास सब प्रकार की पुस्तकों की भरमार हो, और वह स्वयं को ऐसी बातों की जानकारी प्रदान करे जो लेखकों के कलम से छूटकर मनुष्य की याददाश्त में विश्वासयोग्यता के साथ बनी हुई हों, कि कहीं ऐसा न हो कि उसका लेखन कई बातों में त्रुटिपूर्ण हो।

जैसा कि हम यहाँ पर देख सकते हैं प्लूटार्क ने यहाँ पर मजबूती से यह माना कि विश्वसनीय इतिहासकारों की विश्वसनीय स्त्रोतों तक पहुँच होनी चाहिए। और उसने सारे उपलब्ध स्त्रोतों, चाहे वे लिखित वर्णन हों या मौखिक रूप से आए हुए, के सावधानीपूर्ण वर्णन को बहुत अधिक महत्व दिया।

प्रत्येक सुसमाचार लेखक या तो यीशु के जीवन का गवाह था या यीशु के जीवन के किसी गवाह के साथ उसका सीधा संबंध था। चूंकि मत्ती और यूहन्ना यीशु के चेले थे, इसलिए वे उनमें से अनेक घटनाओं के समय स्वयं उपस्थित थे जिनका उन्होंने वर्णन किया है। मरकुस, पतरस का घनिष्ठ सहकर्मी था, और उसने उससे प्रत्यक्ष रूप से काफी कुछ सीखा था। लूका ने पौलुस के संग यात्रा की थी और अपने सुसमाचार के लिए विश्वसनीय गवाहियाँ प्राप्त की थीं। सुनिए लूका ने लूका 1:1-3 में क्या लिखा है :

> बहुतों ने उन बातों को जो हमारे बीच में होती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया। इसलिये... मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच करके उन्हें... क्रमानुसार लिखूं। (लूका 1:1-3)

स्पष्टवादिता

दूसरा, हम सुसमाचारों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को उनके कार्यों में उच्च स्तर की स्पष्टवादिता में भी देख सकते हैं। अच्छे इतिहास-लेखन के लिए प्राचीन स्तरों ने इतिहासकारों से अपने इतिहास के वर्णन में निष्पक्ष या ईमानदार रहने की मांग की थी। उनसे विवरणों की पूरी श्रेणी का ब्यौरा देने की अपेक्षा की जाती थी, उन बातों के बारे में भी जो दिए जाने वाले सन्देश के अनुकूल न भी हों तो भी।

इस भाव में, यह महत्वपूर्ण है कि सुसमाचार लेखकों ने नियमित रूप से यीशु के चेलों की असफलता का वर्णन किया। और मत्ती एवं यूहन्ना के विषय में इसका अर्थ है उनकी अपनी व्यक्तिगत असफलताओं का वर्णन करना। और यदि कुछ व्याख्याकारों का अनुमान सही है तो मरकुस 14:51-52 में गतसमने के बाग़ से नंगा भागने वाला युवक स्वयं मरकुस ही है, इसका अर्थ है कि मरकुस ने भी अपनी ही कमियों का वर्णन किया। और बिना किसी अपवाद के, सभी सुसमाचार लेखकों ने एक रूप में यीशु के चेलों की असफलताओं को प्रकट किया, और माना कि उनके छोटे कलीसियाई आन्दोलन के अगुवे सिद्ध नहीं थे।

एक उदाहरण के तौर पर, मरकुस 6:51-52 यीशु द्वारा पांच हजार लोगों को चमत्कारी रूप से भोजन खिलाने को समझने की चेलों की असफलता को दर्शाता है :

> वे बहुत ही आश्चर्य करने लगे। क्योंकि वे उन रोटियों के विषय में ने समझे थे परन्तु उन के मन कठोर हो गए थे। (मरकुस 6:51-52)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बार-बार सुसमाचार लेखकों ने यीशु के चेलों की ग़लतफ़हमी और उनकी नैतिक असफलताओं का वर्णन किया है। परन्तु यदि इन असफलताओं का उल्लेख करने का अर्थ कलीसिया के अगुवों के अधिकार और सम्मान को कम करना था तो सुसमाचार के लेखकों ने ऐसा क्यों किया?

> बहुत से पाठक इस बात से व्याकुल हैं कि चेलों को सुसमाचारों में सिद्ध और अच्छी समझ वाले लोगों के रूप में नहीं दिखाया गया है। एक भाव में मैं यदि कहूँ तो यह सुसमाचार परंपरा की विश्वसनीयता को दर्शाता है, और यह भी कि सुसमाचार प्रचारक वास्तव में उन बातों को लिखने के लिए भी तैयार थे जिन्होंने कलीसिया के सबसे पहले अगुवों को यदि बुरा नहीं दर्शाया तो बहुत अच्छा भी नहीं दर्शाया। अतः इस भाव में यह हमारे सुसमाचारों की विश्वसनीयता और सटीकता की गवाही है।
>
> डॉ. डेविड बौएर

> मेरा सुझाव यह है कि चेलों द्वारा अपनी ही कहानियों में अपने आप को ही बुरे रूप में दर्शाने की प्रवृति सुसमाचारों के अधिकारपूर्ण होने का एक मजबूत तर्क है। जब आप बेबीलोन या अश्शूर के राजाओं या रोम के सम्राटों के प्राचीन वर्णनों को पढ़ते हैं तो आप उनमे केवल विजय और सफलता को ही पाएंगे : "ये है मेरी महिमामय संपत्ति!" और निसंदेह, अब हम मुड़कर देखते हैं और कहते हैं, अच्छा, वास्तव में क्या हुआ था? हम चेलों की ओर देखते हैं और आप जानते हैं वे वैसे ही हैं... इसके बारे में सोचें : कौन निर्बुद्धि ऐसे धर्म को बनाएगा जिसमे उनका नायक ही क्रूस पर चढ़ाया जाता है, जो कि एक रोमी के लिए राजद्रोह और अधार्मिकता का प्रमाण है, और उस समय रोमियों का शासन है, और यहूदियों के लिए श्रापित होने का प्रमाण है, और वे आपके प्रमुख श्रोता हैं। यदि वास्तव में ऐसा हुआ नहीं है, तो आप कभी इसे ऐसे ही नहीं लिख सकते।
>
> डॉ. डान डोरीयानी

पुष्टिकरण

तीसरा, सुसमाचार लेखकों की विश्वसनीयता में हमारा विश्वास अन्य ऐतिहासिक स्त्रोतों के पुष्टिकरण से मजबूत होता है। रोमी और यहूदी इतिहासकारों ने सुसमाचारों के विवरणों के अनेक दावों की पुष्टि की है, और आधुनिक पुरातत्व विज्ञान ने भी इस बात का प्रमाण पाया है कि उनके विवरण सत्य हैं।

उदाहरण के तौर पर प्लिनी द यंगर, सूटोनियस, टैसीटस और जूलियस अफ्रिकानस ने यीशु के जीवन, क्रूसीकरण द्वारा मृत्यु, और चिरस्थाई प्रभाव की कुछ आधारभूत बातों का उल्लेख किया है।

> हमारे सामने यहूदी इतिहासकार योसेफस है जिसने पहली शताब्दी ईस्वी में रोमी सरकार के लिए यहूदियों के इतिहास को लिखा और उसने यीशु के अस्तित्व और अनुयायियों के समूह का उल्लेख भी किया। हमारे सामने पहली शताब्दी ईस्वी का रोमी इतिहासकार टैसीटस है, जो कि योसेफस का समकालीन है, उसने भी यीशु और उसके अनुयायियों के समूह का उल्लेख किया। यहूदी तलमूड भी यीशु के अस्तित्व का उल्लेख करते हैं।
>
> डॉ. स्टीवन सूकालस

> मैं सोचता हूँ कि एक सामान्य तरीका है जिसमें हम वास्तव में सुसमाचारों की विश्वसनीयता पर ध्यान देने के लिए रखे गए हैं, जो कि पहले से इस भाव में बेहतर कि अब हम पहली सदी के यहूदी फिलिस्तीन के बारे में 50 वर्ष पहले की तुलना में अधिक जानकारी रखते हैं। और हम जानते हैं कि डेड सी स्क्रोल्स जैसे साहित्य की खोज, और पुरातत्वीय खोज के माध्यम से हम यह सब जानते हैं। और पवित्र भूमि में पुरातत्व विज्ञान एक गति को बनाये हुए है- निरन्तर नई खोजें हो रही हैं। अतः, हम उस सन्दर्भ के बारे में काफी कुछ जानते हैं जिसमें यीशु ने सेवा की थी। और ऐसे भिन्न-भिन्न तरीके हैं जिनमें हम यह पूछ सकते हैं कि क्या सुसमाचारों द्वारा कही जाने वाली बातें विश्वसनीयता के साथ उस सन्दर्भ में उपयुक्त बैठती हैं या नहीं। क्या उस विशेष सन्दर्भ में यीशु को यहूदी शिक्षक के रूप में देखना अर्थपूर्ण है? और मैं सोचता हूँ कि सम्पूर्ण भाव से हम यह कह सकते हैं यह बहुत अच्छे तरीके से उपयुक्त बैठता है। और जब हम यह याद करते हैं, निसंदेह यहूदी फिलिस्तीन में 66-70 ईस्वी के बाद से परिस्थितियां पूरी तरह से बदल गयीं। अतः, हमारे पास एक सीमित समयावधि है जिसमें हम परख सकते हैं कि क्या सुसमाचार उस समयावधि में उपयुक्त बैठते हैं या नहीं, इसकी अपेक्षा कि क्या वे यहूदी विद्रोह के बाद की परिस्थिति को ही दर्शा रहे हैं, हम उन सारी बातों की आशा नहीं करेंगे जो उस परिस्थिति से परस्पर संबंधित हों जिसके बारे में हम आरंभिक पहली सदी के यहूदी धर्म के सन्दर्भ में जानते हैं।
>
> डॉ. रिचर्ड बौखाम

प्रशिक्षण

सुसमाचार विवरणों पर भरोसा करने का चौथा पांचवां कारण यह है कि जो प्रशिक्षण यीशु के चेलों ने प्राप्त किया था उसे उन्हें सिखा दिया होगा कि किस प्रकार उसके शब्दों और कार्यों को अच्छी तरह से संभाल कर रखें।

यहूदी संस्कृति में, शिष्यता या चेलापन जीवन का एक स्थापित मार्ग था। वास्तव में, चेले के लिए इब्रानी शब्द तलमिद है, जिसका अर्थ है विद्यार्थी या सीखने वाला। विशेष तौर से, चेला एक विशेष संत या रब्बी का विद्यार्थी होता था। इससे बढ़कर, यीशु के समय की यहूदी संस्कृति में रब्बी से सीखने का एक मुख्य कार्य कंठस्थ करना था। और उसके चेलों की मुख्य जिम्मेदारी अपने शिक्षक के शब्दों और उसकी बुद्धि को सीखना थी।

लूका 6:40 अपने चेलों से कहे गए यीशु के शब्दों को सुनिए :

> चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरू के समान होगा। (लूका 6:40)

यीशु का अर्थ था कि जो भी उसका अनुसरण करते हैं, उन्हें उसकी शिक्षाओं और उसके कार्यों का अध्ययन करना, उन्हें सीखना और उनके अनुसार अपने जीवनों को ढालना आवश्यक है।

यीशु के करीब रहने वाले 12 चेलों पर यीशु की शिक्षाओं को सीखने की बड़ी जिम्मेदारी थी, वहीँ उन अनेक लोगों ने जिन्होंने यीशु से शिक्षा प्राप्त की, उन्होंने अपनी याददाश्त में उसकी अधिकांश शिक्षा को बनाये रखा।

धर्मवैज्ञानिक बोध

पाँचवां, हमें कभी इस बात को कम करके नहीं आंकना चाहिए कि सुसमाचार लेखकों में मजबूत धर्मवैज्ञानिक बोध थे जिन्होंने एक सच्चे और विश्वसनीय विवरण की आवश्यकता पर बल दिया। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना 20:31 में प्रेरित ने ये शब्द लिखे :

> परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:31)

इस अनुच्छेद में यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि लोग परमेश्वर के जीवन के वरदान को तभी प्राप्त कर सकते हैं जब उन्होंने यीशु के बारे में सत्य को जान लिया हो और उसे स्वीकार कर लिया हो।

इसी प्रकार, मत्ती ने अपने सुसमाचार के 28:19-20 में इन शब्दों को लिखा :

इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। (मत्ती 28:19-20)

यहाँ मत्ती ने कहा कि यीशु के चेलों के पास उन सब बातों को सिखाने की जिम्मेदारी थी जिसकी यीशु ने उन्हें आज्ञा दी थी। यीशु के निष्ठावान चेलों के रूप में, वे यीशु के कार्यों और वचनों के सच्चे विवरणों को प्रदान करने की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं कर पाए।

सुसमाचार लेखकों ने केवल उनके ऐतिहासिक महत्व के लिए ही यीशु के जीवन की घटनाओं को नहीं लिखा था, वे जानते थे कि यीशु में विश्वास उसके बारे में ऐतिहासिक वास्तविकताओं को जानने से कहीं अधिक है। परन्तु वे यह भी जानते थे कि सच्चा विश्वास झूठे या त्रुटिअधीन ऐतिहासिक विवरण पर आधारित नहीं हो सकता। उन्होंने यीशु के शब्दों और कार्यों को स्पष्टता और सटीकता के साथ व्यक्त किया क्योंकि वे अपने पाठकों से चाहते थे कि वे सच्चे यीशु, इतिहास के यीशु पर विश्वास करें।

पवित्र आत्मा

छठा, बाइबल के सारे लेखकों के समान, यीशु के शब्दों और कार्यों के विवरण को लिखने के लिए सुसमाचार के लेखकों को उन्हीं की सामर्थ पर नहीं छोड़ दिया गया था। इस प्रयास में पवित्र आत्मा ने उनकी अगुवाई की थी।

> पवित्रशास्त्र की प्रेरणा एक बहुत ही महत्वपूर्ण धर्मशिक्षा है क्योंकि यह सारे पवित्रशास्त्र का एक ही लेखक बताती है। अतः, जब हम सुसमाचारों की ओर देखते हैं, और पाते हैं कि चार अलग-अलग लेखक यीशु के चार अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, तो हमें उन दृष्टिकोणों की प्रशंसा करनी चाहिए परन्तु इसके साथ-साथ यह भी महसूस करना चाहिए कि पवित्र आत्मा ने उन सबको प्रेरित किया है। और इसीलिए वे सब अलग-अलग लक्ष्यों, धर्मविज्ञानों, श्रोताओं, पृष्ठभूमियों और यीशु के साथ अपने अलग-अलग लक्ष्यों के साथ आते हैं। परन्तु जब मानवीय लेखकों के आधार पर हम उनमें विविधता को पाते हैं वहीँ उनमें एक अद्वितीय एकता भी पाते हैं। पवित्रशास्त्र में आत्मा की प्रेरणा उसमें से मानवीय घटक या मानवीय कार्य को हटाती नहीं, परन्तु इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर इन मानवीय प्रयासों के माध्यम से उन्हीं बातों को रखता हैं जिन्हें वह चाहता है।
>
> डॉ. एरिक थोनेस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यूहन्ना 14:25-26 में यीशु के शब्दों को सुनें :

> ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। (यूहन्ना 14:25-26)

यीशु के चेले चाहे कंठस्थ करने में कितने भी अच्छे थे, वे सब बातों को कंठस्थ नहीं कर पाते। इसीलिए यीशु ने अपने चेलों के पास पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा की और भेजा। और पवित्र आत्मा ने उन्हें उन सब बातों को याद करने के योग्य बनाया जिसे कलीसिया को सदियों से जानने की आवश्यकता थी कि यीशु ने क्या किया और कहा था। जैसे कि यूहन्ना ने अपने सुसमाचार 21:25 में लिखा था :

और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं। (यूहन्ना 21:25)

> यह रूचिकर है जब आप लोगों से यीशु के बारे में बात करते हैं और आप उनसे पूछते हैं कि यीशु कौन है, कुछ लोग शायद कहेंगे कि वह एक रब्बी है, वह एक शिक्षक है, यदि आप संसार के भिन्न-भिन्न धर्मों और भिन्न-भिन्न समूहों को देखें तो कुछ लोग उसके बारे में अलग-अलग दावे कर सकते हैं। परन्तु परमेश्वर की बुद्धि में, परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से अपने गवाहों को चार प्रमाणित विवरणों में विश्वास के वर्णन को लिखने की प्रेरणा दी। इसी कारण मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना में- चाहे स्वयं लेखक की ओर से या उसके स्त्रोतों की ओर से- हमारे पास गवाहों की अधिकारिक साक्षी है, जिसे पवित्र आत्मा ने सुरक्षित रखा, जो कि एक स्तर के रूप में कार्य करता है। अतः, यदि कोई कहता है, "यीशु ने यह कहा, या यीशु ने ऐसा किया होगा या यीशु ने ऐसा नहीं कहा होगा," तो हमारे पास पास एक भरोसेमंद वर्णन है जिसे हम देख सकते हैं, और परमेश्वर ने हमें हमारे विश्वास के लिए वह मापदंड दिया है।
>
> डॉ. रोबर्ट प्लुमर

कलीसिया में महत्व

यहाँ जब हम सुसमाचारों के साहित्यिक चरित्र के बारे में बात कर चुके हैं, तो अब हम आधिकारिक रूप से लिखित प्रपत्रों के रूप में कलीसिया में उनके महत्व की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। हम उनके संयोजन और परमेश्वर के वचन के रूप में उनकी प्रमाणिकता पर ध्यान देने के द्वारा कलीसिया में सुसमाचारों के महत्व की जांच करेंगे। आइए, पहले उनके संयोजन की ओर मुड़ें।

संयोजन

जब हम सुसमाचारों के संयोजन के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में यह बात है कि वे किस प्रकार से लिखे गए हैं। उनके लेखक कौन थे? उन्होंने इन पुस्तकों को क्यों लिखा? उन्होंने ये पुस्तकें कैसे लिखीं? मसीहियों के लिए इन जैसे प्रश्नों को खोजना महत्वपूर्ण है क्योंकि अनेक व्याख्याकारों ने इन

पुस्तकों के दैवीय अधिकार को कम करने के लिए संयोजन की मानवीय प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित किया है। परन्तु शुभ सन्देश यह है कि सावधानी से की हुई जांच हमें इस बात के प्रति आश्वस्त होने का हर कारण प्रदान करती है कि सुसमाचार केवल मनुष्यों द्वारा लिखित कृतियाँ ही नहीं है, बल्कि परमेश्वर का वचन भी हैं।

हम सुसमाचारों के संयोजन से संबंधित तीन विषयों को देखेंगे। पहला, हम भिन्न सुसमाचारिक विवरणों के बीच पाई जाने वाली समानताओं की जांच करेंगे। दूसरा, हम संयोजन के कुछ ऐसे सिद्धांतों का सर्वेक्षण करेंगे जिनका उदय इन समानताओं को स्पष्ट करने के लिए हुआ है। और तीसरा, हम उस निश्चितता के बारे में कुछ टिप्पणियां करेंगे जिसके साथ हमें इन सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध रहना चाहिए। आइए, सुसमाचारों के बीच पाई जाने वाली समानताओं पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ करें।

समानताएं

चाहे ये अलग-अलग लिखे गए हों, फिर भी मत्ती, मरकुस, लूका के सुसमाचार विवरणों को एक साथ रखा जाता है और उन्हें समदर्शी सुसमाचार कहा जाता है। शब्द "समदर्शी" का अर्थ है "एक साथ दिखना," और इसे इसलिए इन सुसमाचारों पर लागू किया जाता है उनमें अधिकांश एकसमान वर्णन पाए जाते हैं। उनमें यीशु के शब्दों और कार्यों के अनेक समान वर्णन पाए जाते हैं। और जब वे यीशु के समान कथनों को बताते हैं, तो वे प्रायः समान शब्दों का भी इस्तेमाल करते हैं।

उदाहरण के तौर पर, लकवे के रोगी को यीशु द्वारा दी गई चंगाई पर ध्यान दीजिए। मत्ती 9:6 में हम प्रभु के वचनों और कार्यों के इस वर्णन को पढ़ते हैं :

> परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, तब उसने लकवे के रोगी से कहा, "उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।" (मत्ती 9:6)

अब मरकुस 2:10-11 को सुनें :

> परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, उसने उस लकवे के रोगी से कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ, उठ अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।" (मरकुस 2:10-11)

और फिर, लूका 5:24 में हम यह पढ़ते हैं :

> परन्तु इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है। उसने उस लकवे के रोगी से कहा, "मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।" (लूका 5:24)

इस उदाहरण में, हम देखते हैं कि प्रत्येक समदर्शी सुसमाचार में चमत्कार की समान कहानी का समान शब्दों में वर्णन पाया जाता है। अन्य समानांतर कहानियां तीन में से कम से कम दो समदर्शी सुसमाचारों में पाई जाती हैं, वे हैं- कोढ़ी को चंगा करना, कफरनहूम में दुष्टात्मा को निकालना, पतरस की सास को चंगा करना, झील में आए तुफान को शांत करना, याईर की मृत लड़की को जीवित करना, बारहों को अधिकार देना, यीशु का पानी पर चलना, सूखे हुए हाथ के व्यक्ति को चंगाई देना, कुछ रोटियों और कुछ मछलियों से पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाना और यीशु का रूपांतरित होना।

> तीन सुसमाचारों, मत्ती, मरकुस और लूका, को समदर्शी कहा जाता है क्योंकि वे बातों को समान दृष्टिकोण, समान नजरों से देखते हैं। और यह हमें कभी-कभी यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भाव दे सकता है कि जब एक ही पर्याप्त है तो हमें तीन की क्या आवश्यकता है? तीनों समदर्शी सुसमाचारों में से किसी एक को भी खो देना दुखद होगा, क्योंकि वास्तव में प्रत्येक अलग-अलग रूप से योगदान देते हैं, और उनमें पाई जाने वाली कुछ भिन्नताओं को देखना महत्वपूर्ण है। मरकुस का सुसमाचार ऐसा सुसमाचार है जो अन्य सुसमाचारों से अधिक रंगीन है और कुछ व्यक्तिगत कहानियों को काफी लम्बे रूप में बताता है। यद्यपि यह एक छोटा सुसमाचार है, इसकी व्यक्तिगत कहानियों को लम्बे रूप में दर्शाया गया है। मत्ती ने इन कहानियों को छोटे रूप में निचोड़ दिया है क्योंकि वह अपने सुसमाचार में अन्य कई बातों को रखने का प्रयास कर रहा है। और विशेष रूप में, मत्ती यीशु की उन शिक्षाओं को रखने का प्रयास कर रहा है जो मरकुस का सुसमाचार विचित्र रूप से यीशु की शिक्षाओं से हटा देता है। अतः, मत्ती का सुसमाचार एक बहुत ही अधिकारपूर्ण यीशु, सिखाने वाले यीशु को प्रदान करता है, और यदि आप यीशु की शिक्षाओं के ठोस सारांश को चाहते हैं, तो मत्ती का सुसमाचार वह है। परन्तु लूका ने हमें क्या दिया है? लूका ने हमें और अधिक शिक्षाएं दी हैं। लूका ने हमें विशेष रूप से दृष्टान्त दिए हैं- मत्ती से भी अधिक- और उसने हमें यीशु की मानवीय तस्वीर को अधिक प्रदान किया है जो सब लोगों के साथ संबंध बनाता है, एक बहुत ही समावेशी, प्रेमी, सँभालने वाला यीशु। कुछ लोग सोचते हैं कि लूका सिर्फ एक चिकित्सक ही नहीं था, बल्कि एक मनोविज्ञानी भी था; वह मानवीय मनोभावों को बहुत ही अच्छे तरीके से व्यक्त कर सकता है। और इसलिए मैं सोचता हूँ कि इन तीनों सुसमाचारों में हमने तीन बहुत ही कीमती, भिन्न आलेखों को प्राप्त किया है, और हमें प्रत्येक का महत्व समझने की आवश्यकता है।

डॉ. पीटर वॉकर

मैं सोचता हूँ कि हमारे पास यीशु के जीवन का वर्णन करने वाले तीन समरूपी सुसमाचारों के होने का आधारभूत कारण यही है कि यीशु की महानता और सुन्दरता को केवल एक ही विवरण में समाहित नहीं किया जा सकता। अतः, जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर का अभिप्राय क्या था, तो कोई एकमात्र लेखक यीशु की उपलब्धियों के महत्व, यीशु के वचनों और यीशु के कार्यों को बता नहीं सकता। परन्तु, मैं इसमें यह भी जोड़ना चाहता हूँ कि हमें तीनों सुसमाचारों में पाई जाने वाली भिन्नता के प्रति भी संवेदनशील रहना चाहिए। हाँ, वे मूलभूत रूप से एक ही बात कहते हैं, परन्तु प्रत्येक सुसमाचार में सूक्ष्म भेद और रंग पाए जाते हैं। अतः, एक ओर वे हमें यीशु के कार्यों और उसकी उपलब्धियों की आधारभूत कहानी को बताते हैं, और दूसरी ओर, सुसमाचार यीशु के भिन्न पहलुओं को भी दिखाते हैं। अतः, यह एक प्रकार के बहुमूर्तिदर्शी के समान है, सब कुछ बहुमूर्तिदर्शी के अन्दर है, परन्तु फिर भी आप इसे भिन्न-भिन्न कोणों से देखते हैं, और हम यीशु की भिन्न-भिन्न तस्वीरों को पाते हैं। अतः, हम यीशु की इस बहुपक्षीय तस्वीर को हमें देने में परमेश्वर की बुद्धि और पवित्र आत्मा की प्रेरणा को पाते हैं।

डॉ. थॉमस श्रेइनर

समदर्शी सुसमाचारों के विपरीत, यूहन्ना के सुसमाचार का अधिकांश विवरण बिलकुल अलग है। जहाँ यूहन्ना ने भी वर्णन किया कि यीशु पानी पर चला और उसने पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाया, वहीँ उसने ऐसी घटनाओं का वर्णन भी किया जो समदर्शी सुसमाचारों में नहीं पाए जाते। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना ने यीशु के पानी को दाखरस में बदलने, सामरी स्त्री के साथ यीशु के वार्तालाप, और मृत्यु में से लाजर को जीवित करने का विवरण दिया।

यद्यपि यीशु की सेवकाई और जीवन की कहानियां चारों सुसमाचारों में भिन्नता से पाई जाती हैं, फिर भी चारों यीशु के बपतिस्मा, अपने चेलों के साथ यीशु के अंतिम भोज, क्रूस पर यीशु की मृत्यु, और मृतकों से यीशु के पुनरुत्थान की गवही देते हैं।

सुसमाचारों में पाई जाने वाली समानताओं और असमानताओं ने कई प्रतिद्वंदी स्पष्टीकरणों को प्रेरित किया है। अतः, आइए अब सुसमाचारों के संयोजन के सिद्धांतों की ओर मुड़ें।

संयोजन के सिद्धांत

समदर्शी सुसमाचारों के बीच पाई जाने वाली अनेक समानताओं के कारण विद्वानों ने उनके संयोजनीय इतिहास के बारे में कई सिद्धांत विकसित किए हैं। ये सिद्धांत प्रायः काफी जटिल होते हैं और जब हम पहले पहल उनका अध्ययन करना आरंभ करते हैं तो वे काफी असमंजस भरे हो सकते हैं। हम सबसे लोकप्रिय सिद्धांतों को इस प्रकार से सारगर्भित कर सकते हैं : अधिकांश व्याख्याकार मानते हैं कि मरकुस का सुसमाचार सबसे पहले लिखा गया था, और फिर मत्ती और लूका ने मरकुस के विवरणों का इस्तेमाल किया, शायद अन्य स्त्रोतों के विवरणों का भी। परन्तु अन्य व्याख्याकार मानते हैं कि मत्ती पहले लिखा गया था, और मरकुस ने मत्ती के विवरणों का प्रयोग किया, और लूका ने मत्ती और मरकुस दोनों के विवरणों का इस्तेमाल किया। और अन्य मानते हैं कि मत्ती और लूका ऐसे स्त्रोतों पर आधारित थे जो अब हमारे पास नहीं हैं, और कि मरकुस ने उन दोनों के विवरणों का इस्तेमाल किया। जैसे कि आप देख सकते हैं, इन सिद्धांतों की सामान्य विशेषताओं की तुलना करना भी कुछ असमंजस भरा हो सकता है।

इसके विपरीत, यूहन्ना का संयोजन काफी सरल है। अधिकांश व्याख्याकार सहमत होते हैं कि उसने पहली सदी के लगभग अंत में लिखा था, और वह कम से कम एक और शायद सारे समदर्शी विवरणों से परिचित था। कभी-कभी यह सुझाव दिया जाता है कि उसने उन सारे विवरणों को नहीं दोहराया जिनके बारे में वह जानता था कि वे समदर्शी विवरणों में थे, और इसलिए उसने उस अतिरिक्त जानकारी को प्रदान करने का निर्णय किया जो उन समुदायों के लिए सबसे प्रासंगिक थी जिनमें वह सेवा करता था।

संयोजन के इन सिद्धांतों को मन में रखते हुए, आइए हम उस निश्चितता के बारे में बात करें जिसे हमें पकडे रहना चाहिए।

निश्चितता

आरंभ से ही, हमें यह पहचान लेना चाहिए कि बाइबल के लेखकों ने प्रायः मौखिक और लिखित परंपराओं का इस्तेमाल किया- और इस बात ने उनकी प्रेरणा या अधिकार से समझौता नहीं किया। अतः सैद्धांतिक रूप से इस बात पर विश्वास करने में कुछ गलत नहीं है कि कोई सुसमाचार लेखक पहले से उपलब्ध स्त्रोत पर निर्भर था। जैसे कि लूका ने लूका 1:1-3 में लिखा :

> बहुतों ने उन बातों को जो हमारे बीच में होती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया। इसलिये... मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच करके उन्हें... क्रमानुसार लिखूं। (लूका 1:1-3)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ऐसा प्रतीत होता है बाकी सारे सुसमाचार लेखकों के पास भी ऐसे ही स्त्रोतों की पहुँच थी, यद्यपि वे स्पष्ट रूप से लूका के समान इसका उल्लेख नहीं करते। यदि हम अधिकांश व्याख्याकारों के साथ यह मान लें कि मरकुस ने सबसे पहले सुसमाचार लिखा, तो उसके पास पहले से लिखे सुसमाचारों की पहुँच नहीं थी, परन्तु उसने मौखिक परंपराओं को निश्चित रूप से इस्तेमाल किया, कम से कम अपने घनिष्ठ मित्र पतरस से तो अवश्य ही किया। लूका और मत्ती ने शायद एक नमूने के रूप में मरकुस के सुसमाचार का प्रयोग किया। इसके अतिरिक्त, मत्ती और यूहन्ना के पास यीशु के जीवन और उसकी शिक्षाओं की अपनी स्मृतियाँ थीं। और सभी चारों सुसमाचार लेखकों पर त्रुटिरहित रूप में पवित्र आत्मा का नियंत्रण था, जैसा कि हम पहले देख चुके हैं।

सारांश में, हम सुसमाचारों के बीच पाए जाने वाले संबंध के विषय के सिद्धांतों की सराहना कर सकते हैं। परन्तु हमें उनके सारे विवरणों को समझने की जरुरत महसूस नहीं करनी चाहिए, और न ही उनमें से किसी एक पर पूरी तरह निर्भर रहना चाहिए। ये सिद्धांत हमें यह बताते हैं कि प्रत्येक सुसमाचार प्रचारक के पास अनेक स्त्रोतों से जानकारी प्राप्त करने और यीशु के जीवन और शिक्षाओं के विश्वसनीय विवरणों की रचना करने की योग्यता थी। जब हम उनके विवरणों में एकसमान बातों को पाते हैं, तो हमारे पास सुसमाचारकों के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों पर ध्यान देने का अवसर होता है, फिर इसका कोई महत्व नहीं रहता कि कौनसा किससे पहले लिखा गया था। और जब हम ऐसे विवरण को पाते हैं जो केवल एक ही सुसमाचार में पाया जाता है, तो हम उसका अध्ययन उस लेखक के उद्देश्यों के प्रकाश में कर सकते हैं।

चारों सुसमाचारों के संयोजन पर ध्यान देने के बाद, हम उनकी प्रमाणिकता को संबोधित करने के लिए तैयार हैं :

प्रमाणिकता

कलीसिया की आरंभिक सदियों में, इस विषय में कुछ असहमतियां थीं कि प्रैरितिक युग की कौनसी पुस्तकें नए नियम से संबंधित हैं। कुछ आरंभिक कलीसियाई अगुवों ने उन सारी पुस्तकों की पुष्टि नहीं की थी जो आज हम नए नियम में पाते हैं। अन्य लोगों ने माना था कि हमें वर्तमान की सत्ताईस पुस्तकों से अतिरिक्त पुस्तकों को भी शामिल करना चाहिए।

परन्तु इन विवादों में मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकें शामिल नहीं थीं। इन चारों सुसमाचारों- इनके अतिरिक्त कोई और नहीं- को सदैव परमेश्वर की विश्वासयोग्य कलीसियाओं के द्वारा विशुद्ध और अधिकारपूर्ण रूप में स्वीकार किया गया।

उदाहरण के रूप में, तीसरी सदी के कलीसियाई पूर्वज ओरीगेन, जिसका जीवनकाल 185 से 254 ईस्वी तक था, ने तर्क दिया कि नए नियम में जो चार सुसमाचार आज हमारे पास हैं वही प्रमाणिक हैं।

ओरीगेन को कलीसिया इतिहासकार युसेबिअस, जिसका जीवनकाल 263 से 340 ईस्वी तक था, द्वारा उद्धृत किया गया। अपनी कृति ऐकलेसियास्टिकल हिस्ट्री पुस्तक 6, अध्याय 25, खंड 4 में युसेबिअस द्वारा ओरीगेन के लिए कहे गए शब्दों को सुनें :

> आकाश के नीचे परमेश्वर की कलीसिया में केवल चार सुसमाचार... ही निर्विवाद हैं।

इसके अतिरिक्त, एक सदी पूर्व कलीसियाई पूर्वज आयरेनियस, जिसका जीवनकाल 130-202 ईस्वी तक था, ने अपनी कृति अगेंस्ट हेरेसीस पुस्तक 3, अध्याय 11, खंड 8 में सामूहिक रूप से चार-रुपी सुसमाचार के बारे में बात की थी। सुनिए उसने क्या लिखा था :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यह संभव नहीं है कि सुसमाचार संख्या में इससे ज्यादा या कम हों... जो मनुष्य के समक्ष प्रकट हुआ, अर्थात् यीशु ने हमें चार पहलुओं, परन्तु एक आत्मा के साथ बंधा हुआ सुसमाचार दिया है।

आयरेनियस ने कहा कि वह ऐसे किसी समय के बारे में नहीं जानता जब चारों में से किसी भी सुसमाचार के प्रति कोई विवाद हुआ हो या फिर इन के अतिरिक्त किसी और सुसमाचार को कलीसिया की आराधना में इस्तेमाल किया गया हो।

विश्वासयोग्य लेखक

आरंभिक कलीसिया के पास इन चारों सुसमाचारों में अटूट विश्वास के कम से कम तीन कारण थे। पहला, कलीसिया ने सुसमाचारों को प्रमाणिक रूप में ग्रहण किया क्योंकि अपने शीर्षकों में वे विश्वासयोग्य लेखकों के द्वारा लिखे गए थे।

बहुत अधिक सम्भावना है कि सुसमाचार मूल रूप से नाम रहित थे। परन्तु सम्भावना यह भी है कि जब वे पहली बार प्रकाशित किये गए, तो उन्हें उन लोगों के द्वारा स्वीकार किया गया जो लेखकों को जानते थे, या फिर शायद लेखकों को पहचानते हुए पत्रों के साथ उन्हें वितरित भी किया। और आरंभिक समय से ही, मसीही लेखनों ने सुसमाचारों को मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना के साथ जोड़ा- अर्थात् ऐसे चार लोग जो नए नियम में कलीसियाई अगुवों के साथ अच्छी प्रतिष्ठा में जाने जाते हैं।

प्रैरितिक अनुमोदन

दूसरा, आरंभिक मसीही कैनन में सुसमाचारों के स्थान के प्रति भी विश्वस्त थे क्योंकि वे इस बात को जानते थे कि इन पुस्तकों को प्रैरितिक अनुमोदन मिला है।

मत्ती और यहून्ना प्रेरित थे, यीशु के शब्दों और कार्यों के गवाह थे। मरकुस के बारे में कहा जाता है कि उसने अपनी काफी बातों को पतरस से लिया था, जिसने 1 पतरस 5:13 में मरकुस को स्नेह से "मेरा पुत्र" के रूप में संबोधित किया है। और हम लूका 1:1-14 में पहले ही देख चुके हैं कि लूका ने स्पष्ट किया था कि उसने अपने कार्य को गवाह के वर्णनों पर आधारित किया है।

इससे बढ़कर, अपनी कृति ऐकलेसियास्टिकल हिस्ट्री में एसुबिअस ने दर्शाया कि प्रेरित यूहन्ना ने अपना सुसमाचार लिखने से पहले शेष तीनों सुसमाचारों का अनुमोदन किया। सुनिए अपनी कृति की पुस्तक 3, अध्याय 24, खंड 7 में प्रेरित यूहन्ना के बारे में एसुबिअस ने क्या कहा :

> मत्ती, मरकुस और लूका के तीनों सुसमाचार सब लोगों के हाथ में आ गए और उसके अपने हाथ में भी, वे कहते हैं कि उसने उन्हें स्वीकार किया और उनकी सत्यता की गवाही दी।

कलीसिया के गवाह

और तीसरा, सभी चारों सुसमाचार पहली सदी की कलीसिया की गवही से समर्थित हैं। चारों पुस्तकें इतनी पुरानी हैं कि यीशु के जीवन और सेवकाई के जीवित गवाह उनके विवरणों को ठुकराने या उनकी पुष्टि करने के योग्य थे। और ऐसा हुआ भी, गवाहों ने बहुत आरंभ से ही अपनी कलीसियाओं में उन्हें स्वीकार करके उनकी पुष्टि की।

> परमेश्वर अपने वचन में अपनी आवाज की गवही देता है। परन्तु हमारी सहायता के लिए, हम उन ऐतिहासिक घटनाओं को देख सकते हैं जिनका उल्लेख पवित्रशास्त्र में किया गया है, और हम देख सकते हैं कि वे उन बातों से संबंधित हैं

जिन्हें हम इतिहास के रूप में अन्य स्त्रोतों में जानते हैं। और अधिक सामान्य रूप में, हम देख सकते हैं कि सामान्य परिस्थितियां, राजनीतिक परिस्थितियां, भौगोलिक दशा, और बाइबल में उल्लिखित ये सभी अन्य प्रकार की सामान्य बातें, वे सब उन सब के समरूप हैं जो उस समय लिखी गईं जिन्हें हम ऐतिहासिक समयावधि कहते हैं, जिसमें कि पहली सदी का फिलिस्तीन भी शामिल है जब सुसमाचार लिखे गए थे। परन्तु, जब हम बाइबल में विशेष ऐतिहासिक बातों को देखते हैं और जिन ऐतिहासिक दशाओं और परिस्थितियों का वे वर्णन करती हैं, तो यह हमें इस बात को जानने का एक तर्कसंगत आधार प्रदान करता है कि वे अपने कहे हुए समय से आती हैं, और आत्मा की गवही से हम इस सच्चे विश्वास को प्राप्त करते हैं कि वे परमेश्वर का वचन हैं। अतः, आरंभिक कलीसिया कि पहली और दूसरी सदियों में कैनन में सम्मलित चारों सुसमाचारों, जो कि आज हमारे पास हैं, को प्रेरितों या सारे प्रैरितिक स्त्रोतों द्वारा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया और उन्हें यीशु के कार्यों, उसके जीवन और उसकी शिक्षाओं के विश्वासयोग्य एवं सच्ची साक्षियों के रूप में माना गया।

डॉ. मिकाएल ग्लोडो

इस बात पर विश्वास करने के कई कारण हैं कि सुसमाचार विश्वसनीय, प्रेरणा-प्राप्त हैं और उनमें ऐसी कई बातें हैं जिन्हें हम सीधी या सरल कह सकते हैं। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है : गवाहों ने अपनी गवही को अपने जीवनों के साथ प्रमाणित किया। आप सोचेंगे कि कोड़े खाने, पीटे जाने, कारागृह में डाले जाने, क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले किसी एक ने तो कहा होता, "अरे, तुम तो जानते ही हो, यह तो बस एक कहानीभर है।" जो उन्होंने कहा, उसके लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। निसंदेह हम जानते हैं कि लोग मरने के लिए तैयार रहते हैं... लोग प्रायः झूठ के लिए भी मरते हैं। अधिकांश लोग जो झूठ के लिए मरते हैं, वे नहीं जानते कि वह झूठ है। बहुत ही कम लोग झूठ के बारे में सच्चाई को जानते हुए भी उसके लिए मर जाते हैं यदि वह उन्हें उनके जीवनकाल में अधिकार, धन या ख्याति प्रदान करता है। उन्हें उनमें से कुछ भी नहीं मिलता। वे इस दुनिया में कुछ भी नहीं थे, वे लगातार भागते रहे, वे गरीबी में रहे, उन्होंने बलिदान किया, उन्हें पीटा गया, और फिर वे मर गए। और उनमें से एक भी अपनी गवही से नहीं मुकरा। अतः, हम पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि वह सब वास्तव में हुआ था।

डॉ. डैन डोरीयानी

एकता

हम यहाँ पर सुसमाचारों के साहित्यिक चरित्र को जांच चुके हैं और कलीसिया में उनके स्थान को देख चुके हैं, इसलिए अब हम नए नियम के चारों सुसमाचारों के बीच की एकता को देखने के लिए तैयार हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम सुसमाचारों के बीच की एकता पर दो प्रकार से ध्यान देंगे; पहला, इस बात की पुष्टि करने के द्वारा कि प्रत्येक पुस्तक परमेश्वर के राज्य की समान कहानी बताती है, और दूसरा, उस महत्व को जांचने के द्वारा जो वे परमेश्वर के राज्य को लानेवाले के रूप में यीशु पर देते हैं। आइए, इस पुष्टि के साथ आरंभ करें कि नए नियम के सारे सुसमाचारों के द्वारा समान कहानी बताई गई है।

समान कहानी

सामान्य भाव में, हम कह सकते हैं कि मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना की पुस्तकों में बताई गई कहानी सुसमाचार है। वास्तव में, इसीलिए उन पुस्तकों को "सुसमाचार" कहा जाता है। वे ऐसी पुस्तकें हैं जो सुसमाचार की कहानी बताती हैं। परन्तु सुसमाचार की कहानी वास्तव में है क्या?

"सुसमाचार" शब्द यूनानी शब्द युएन्गेलिओन (*εαγγέλιον*)का अनुवाद है जिसका अर्थ होता है "शुभ सन्देश।" अतः, जब बाइबल यीशु के सुसमाचार के बारे में बात करती है, तो यह यीशु के बारे में शुभ सन्देश को दर्शाती है। परन्तु यह शुभ सन्देश वास्तव में है क्या? यीशु कौन है? और सुसमाचार उसके बारे में क्या कहानी बताते हैं।

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हमें यह समझना चाहिए कि शब्द "सुसमाचार" को प्राचीन जगत में बहुत ही विशेष प्रकार के समाचारों को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। विशेष तौर से, जब योद्धा या सम्राट नए क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करते थे, तो वे कभी-कभी "शुभ सन्देश" नामक सूचनाओं में अपनी विजय की शाही घोषणा करते थे। "सुसमाचार" शब्द के इस प्रयोग में "शुभ सन्देश" राजा की विजय की घोषणा थी, और यह घोषणा भी थी कि उसका राज्य उसके लोगों के लिए आशीष लेकर आएगा। और पुराने नियम में भी कभी-कभी इस शब्द का इसी प्रकार इस्तेमाल किया गया था।

उदाहरण के लिए, यशायाह 52:7 के शब्दों को सुनें :

> पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शांति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है। (यशायाह 52:7)

इस अनुच्छेद में, यशायाह ने एक दर्शन देखा जिसमें यरूशलेम के चारों ओर के पहाड़ों पर सन्देशवाहक इस शुभ सन्देश को देते हैं कि इस्राएल की बन्धुआई का समय समाप्त हो गया है। उन्होंने सबके ऊपर परमेश्वर के राज्य के कारण शांति और उद्धार की घोषणा की।

यशायाह की भविष्यवाणी के सन्दर्भ में, परमेश्वर का राज्य- पृथ्वी पर उसके राज्य का निर्माण- वह शुभ सन्देश था जिसे इस्राएल और यहूदा के लोगों को सुनना था। यह वह सन्देश था कि परमेश्वर के राजत्व में उन्हें अपने शत्रुओं से विश्राम मिलेगा और वे परमेश्वर के समूचे राज्य में सदैव तक रहेंगे।

परन्तु यशायाह के समय में, परमेश्वर ने तब तक ऐसा किया नहीं था। यशायाह की भविष्यवाणी ने भविष्य में एक ऐसे दिन की आशा रखी जब परमेश्वर सारी पृथ्वी पर राजा के रूप में शासन करेगा। और जो शुभ सन्देश मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना ने बताया यही था कि वह दिन यीशु में आ चुका है। सारे सुसमाचार लेखकों ने वही कहानी बताई, उन्होंने यीशु को उसी रूप में दर्शाया जो परमेश्वर के राज्य को लेकर आया था, और जो पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा कर रहा था। वे सुंदर पांवों वाले संदेशवाहक थे जिन्होंने यह घोषणा की कि परमेश्वर का राज्य अपने अंतिम राजा यीशु के द्वारा पृथ्वी पर आ चुका था। राज्य के आने की यह कहानी उस सम्पूर्ण एकता को दर्शाती है जो सारे सुसमाचारों में पाई जाती है।

इस वास्तविकता के प्रकाश में, यह जानना चकित करने वाला नहीं होना चाहिए कि नए नियम के सुसमाचार "सुसमाचार" और "सुसमाचार प्रचार" जैसे शब्दों का प्रयोग परमेश्वर के राज्य को दर्शाने वाली

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भाषा की अपेक्षा बहुत कम करते हैं। “सुसमाचार” शब्द के विभिन्न रूप मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में केवल 23 पदों में ही पाए जाते हैं। इसके विपरीत, “राज्य,” “परमेश्वर का राज्य,” और मत्ती का विशेष शब्द “स्वर्ग का राज्य” लगभग 150 बार पाए जाते हैं।

अब जब हम समझ गए हैं कि सारे सुसमाचार परमेश्वर के राज्य की समान कहानी बताते हैं, तो आइए अपने राजा के रूप में उस यीशु पर उनके द्वारा दिए गए महत्व को देखें जो परमेश्वर के राज्य को लेकर आता है।

यीशु

यीशु और राज्य पर हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम कुछ प्रमाणों को देखेंगे जो सुसमाचार यह दर्शाने के लिए प्रस्तुत करते हैं कि यीशु राज्य को लेकर आया था। दूसरा, हम उन शब्दों को देखेंगे जिनका इस्तेमाल बाइबल यीशु और राज्य के बारे में बात करने के लिए करती है। तीसरा, हम देखेंगे कि यीशु भिन्न चरणों में राज्य को लाता है। आइए, उन कुछ प्रमाणों के साथ आरंभ करें कि यीशु राज्य को लेकर आया था।

प्रमाण

ऐसे अनेक भिन्न तरीके हैं जिनमें सुसमाचार यीशु में परमेश्वर के राज्य के आने की पुष्टि करते हैं। परन्तु इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल तीन पर ही ध्यान देंगे। हम परमेश्वर के राज्य के पहले प्रमाण के रूप में हम दुष्टात्माओं पर यीशु के अधिकार का उल्लेख करेंगे। सुनिए मत्ती 12:28 में यीशु ने क्या कहा था :

> पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। (मत्ती 12:28)

इस अनुच्छेद में, यीशु ने एक दुष्टात्मा को निकाला था। और दुष्टात्मा को निकालने की उसकी योग्यता ने प्रमाणित कर दिया था कि वह परमेश्वर के राज्य को ला चुका था।

सुसमाचारों द्वारा दर्शाया गया परमेश्वर के राज्य के आने का दूसरा प्रमाण बीमारों को चंगा करने और मुर्दों को जीवित करने की यीशु की सामर्थ थी।

सुसमाचार नियमित रूप से दर्शाते हैं कि चंगा करने की यीशु की सामर्थ- और वह सामर्थ भी जो उसने अपने चेलों को दी- वह प्रमाण थी कि वह परमेश्वर के राज्य को लेकर आया था। हम इस विषय को मत्ती 4:23-24, 8:5-13 और 10:7-8 में पाते हैं। हम इसे लूका 9:1-11 और 10:9 एवं अन्य कई स्थानों में पाते हैं। राज्य के आने को यीशु के पाप क्षमा करने के अधिकार में भी देखा जाता है।

सुनिए यशायाह 33:22-24 में मसीहा के आने के बारे में यशायाह ने क्या भविष्यवाणी की :

> यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा हाकिम, यहोवा हमारा राजा है; वही हमारा उद्धार करेगा। कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूँ; और जो लोग उस में बसेंगे, उनका अधर्म क्षमा किया जाएगा। (यशायाह 33:22-24)

यशायाह ने दर्शाया कि चंगा करना और क्षमा करना परमेश्वर का राजकीय विशेषाधिकार था। और उसने भविष्यवाणी की कि चंगाई और क्षमा आखिरकार मसीहा के द्वारा ही आएगी जब मसीहा पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को पुनर्स्थापित करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और यीशु ने ठीक ऐसा ही किया। उसने लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए बुलाया। उसने मृत्यु की अपेक्षा उन्हें जीवन दिया। यह उद्धार का सन्देश था, पाप से छुटकारे का सन्देश था। मरकुस 2:9-11 में यीशु की चर्चा सुनें :

> सहज क्या है? क्या लकवे के रोगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, उसने उस लकवे के रोगी से कहा, "मैं तुझ से कहता हूँ; उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।" **(मरकुस 2:9-11)**

मनुष्य के पुत्र के रूप में जिसमें राज्य उपस्थित था, यीशु ने सबको चकित कर दिया जब उसने घोषणा की कि उसके पास पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।

यीशु में, परमेश्वर का शासन आ चुका था। परमेश्वर का शासन, परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर था। इसका अर्थ था, परमेश्वर के लोगों के लिए आशीष। इसका अर्थ था परमेश्वर की शांति आ चुकी थी जिसकी भविष्यवाणी अनेक वर्षों पहले यशायाह ने की थी।

इन प्रमाणों को मन में रखते हुए, आइए उस शब्दावली के बारे में बात करें जिनका इस्तेमाल सुसमाचार यीशु और राज्य के बारे में बात करते हुए करते हैं।

शब्दावली

मसीहियों द्वारा परमेश्वर के राज्य पर सुसमाचारों द्वारा दिए जाने वाले महत्व को स्पष्टता के साथ न देख पाने का एक कारण यह है कि सुसमाचार लेखकों ने इसके बारे में बात करने के लिए बहुत सारे भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया है। प्रत्यक्ष रूप से, उन्होंने "राजा" और "राज्य" जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था। परन्तु उन्होंने "शासन," "अधिकार," "सिंहासन," "दाऊद की संतान" और अन्य कई शब्दों का प्रयोग किया जिन्होंने परमेश्वर की सर्वोच्चता और उसके नियंत्रण को दर्शाया।

> नए नियम के लेखक परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करने के लिए अलग-अलग शब्दावली का प्रयोग करते हैं, और वे न केवल स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं बल्कि संबंधित धारणाओं का भी प्रयोग करते हैं। अतः, उदाहरण के लिए हम यीशु के लिए ख्रिस्तोस जैसे शीर्षक को देख सकते हैं, जिसका अर्थ है "मसीहा," "अभिषिक्त जन," जो पुराने नियम की भाषा में राजा, दाऊद की संतान से संबंधित है। हम यीशु के लिए इस्तेमाल किये गए शीर्षक कुरिओस या प्रभु जैसे शब्द में भी यह देख सकते हैं, जो फिर से उसे राजा के रूप में संबोधित करता है, जैसे कि कैसर के समान। कैसर के पास भी वह शीर्षक था। और इसलिए, नए नियम के लेखकों के सन्दर्भ और समय में लोग उस अधिकार को समझते थे जो कि "प्रभु" जैसे शब्द के द्वारा दर्शाई जाती थी। निसंदेह, जो सबसे महत्वपूर्ण वाक्यांश हमारे पास है, वह है "परमेश्वर का राज्य" या मत्ती के सन्दर्भ में "स्वर्ग का राज्य।" और यह वाक्यांश दो प्रकार से बात करता है। एक अपने लोगों के ऊपर मसीह के शासन का अधिकारक्षेत्र, परन्तु इसके साथ यह एक मौखिक विचार है, परमेश्वर का राज्य, अपने लोगों के ऊपर शासन करने वाला परमेश्वर का अधिकार। अतः, एक-दूसरे से जुड़े हुए भाव, जैसे कि आज्ञाकारिता का भाव; यह परमेश्वर के राज्य के शब्दों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता, परन्तु यह राजा के अधिकार में निश्चित रूप से पाया जाता है, और आज्ञाकारिता एवं आराधना में भी जिसकी प्रेरणा यीशु के संबंध में दी जाती है।

डॉ. ग्रेग पैरी

एक उदाहरण के रूप में, मरकुस 2:1-12 में यीशु द्वारा लकवे के रोगी को दी गई चंगाई की कहानी "राजा" या "राज्य" जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करती। परन्तु पद 10 पूरी कहानी के राज्य के अर्थ को देखने में हमें मजबूर करता है जब यीशु कहता है, "मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।" परमेश्वर का राज्य यीशु के चंगाई के सामर्थी कामों और क्षमा के शब्दों में पृथ्वी पर आ चुका था। वास्तव में, परमेश्वर के राज्य की महिमामय और आशीषित प्रकृति का वर्णन करने वाली पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पृष्ठभूमि में, प्रत्येक भला कार्य जो यीशु ने किया वह किसी न किसी तरह से परमेश्वर के राज्य को चखने के समान था।

> पुराने नियम के समय से परमेश्वर के राज्य की अपेक्षा और आशा, विशेषकर यशायाह की पुस्तक से, अपने राज्य को स्थापित करने के लिए परमेश्वर के शासन और अधिकार करने हेतु आने की आशा वास्तव में पुनर्स्थापना के समय की आशा थी, जब सब कुछ सही हो जायेगा। अतः, एक कार्य जो यीशु की सेवा और सुसमाचारों में होता दिखाई देता है, वह है यीशु की चंगाई की सेवा और उसके द्वारा लोगों की पुनर्स्थापना, मृत पुत्रों को जीवित करना, लोगों से लहू बहने को रोकना, टूटे अंगों को सीधा करना और अंधों को आँखें देना। ये धर्मरक्षक रूप में यीशु की सामर्थ और अधिकार के प्रमाण ही नहीं हैं, हाँ वे प्रमाण अवश्य हैं, वे केवल परमेश्वर की सामर्थ के प्रकटीकरण ही नहीं हैं, बल्कि वे उस आशा के गवाह हैं कि परमेश्वर राज्य करता है, उसका पुनर्स्थापना का राजत्व, उसके पुनर्स्थापना का राज्य आ रहा है और वह यीशु में अब आ चुका है। अतः यह एक तरीका है जिसमें हम परमेश्वर के राज्य की भाषा के इस्तेमाल के बिना भी परमेश्वर के राज्य को क्रियान्वित होता देखते हैं।

डॉ. जोनाथन पेनिंगटन

हमने यहाँ पर कुछ प्रमाणों को देख लिया है कि यीशु राज्य को लेकर आया था, और उस शब्दावली पर भी ध्यान दे दिया है जिसका इस्तेमाल सुसमाचार यीशु के राज्य के बारे में बात करने में करते हैं, आइए अब उन भिन्न चरणों का वर्णन करें जिनमें यीशु राज्य को लेकर आता है।

चरण

यीशु ने सिखाया था कि उसके द्वारा प्रदान किया गया राज्य का वर्तमान अनुभव सम्पूर्ण नहीं था। राज्य का अगला चरण आने वाला था। भविष्य में एक नियत समय पर परमेश्वर का राज्य अपनी पूरी सम्पूर्णता में आएगा। यीशु ने लूका 21:27-28 में भविष्य के इस दिन का वर्णन किया :

> तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे। जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा। (लूका 21:27-28)

अनेक यहूदी धर्मविज्ञानियों ने यह सिखाने के लिए पुराने नियम की व्याख्या की कि जब मसीहा आएगा, तो वह एक ही बार में पाप के पुराने युग और मृत्यु को हटा देगा, और इसके स्थान पर परमेश्वर के राज्य के नए युग को लाएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परन्तु यीशु ने दर्शाया कि वह भिन्न चरणों में परमेश्वर के राज्य को ला रहा था। उसने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान राज्य का आरंभ कर दिया था। राज्य अब निरंतर जारी है जब वह स्वर्ग से राज्य को संचालित कर रहा है। और जब उसका पुनरागमन होगा तो इसकी पूर्णता होगी।

> प्रकाशनरुपी यहूदी धर्म में, सम्पूर्ण वास्तविकता को दो भागों में विभाजित किया गया था : वर्तमान बुरा युग और आने वाला युग। और अपेक्षा वहां पर यह है कि जब परमेश्वर अपने अंत-समय के राज्य को लाएगा, अर्थात् आने वाले युग को, तो वह भयानक रूप से, अचानक और पूरी तरह से होगा। आप एकदम से राज्य के पहले के समय से राज्य के समय- राज्य के युग में प्रवेश कर लेते हैं। परन्तु नए नियम में, आपके पास वह है जिसे मैंने नए नियम के युगांत-शास्त्र का विस्तार कहा है, जिससे राज्य का युग- जिसे प्रकाशनरुपी यहूदी धर्म में देखा गया- दो और समयों में विभाजित हो जाता है : स्वर्ग के राज्य का वर्तमान या "मौजूद" समय, एवं स्वर्ग के राज्य का "अभी नहीं आया" समय।
>
> डॉ. डेविड बौएर

> जब हम परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करते हैं, तो हम प्रायः ऐसे बात करते हैं जैसे कि यह "आ चुका है," परन्तु वास्तव में, हम अभी भी भविष्य में राज्य के आने की बाट जोहते हैं। और यीशु ने हमें इस प्रकार प्रार्थना करना सिखाया : "तेरा राज्य आए जैसा कि स्वर्ग में है।" और एक ऐसा भाव भी है जिसमें, क्योंकि राजा आ चुका है, उसने पृथ्वी पर अपने राज्य को आरंभ और स्थापित कर दिया है। परन्तु हम उसके पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मसीह का द्वितीय आगमन ऐसा दिन होगा जिसमें यीशु के पहले आगमन के कार्यों की सारी आशीषें और आशय पूरी तरह से क्रियान्वित हो जाएँगे। और एक ऐसा भाव भी है जिसमें हर विश्वासी की यह जिम्मेदारी है कि वह राजा के भावी आगमन की घोषणा करे जब वह सुसमाचार को लेकर इस संसार में जाते हैं। अतः, हम लोगों को बुलाते हैं कि वे उस दिन के लिए तैयार हो जाएँ जब मसीह का पुनरागमन होगा। परन्तु, विश्वासी होने के नाते हम वर्तमान में मसीह को अपने प्रभु के रूप में पाने के सौभाग्य का आनंद भी लेते हैं, इसलिए हम अब उसके शासन में रहते हैं परन्तु उस दिन की प्रतीक्षा भी करते हैं जब हम उसका पूरी तरह से अनुभव करेंगे, केवल हमारे लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के लिए भी।
>
> डॉ. साइमन विबर्ट

कोई आश्चर्य नहीं कि पहली सदी में अधिकांश यहूदी यीशु से दूर हो गए थे क्योंकि जिस प्रकार उसने राज्य का वर्णन किया वह उस राज्य के समान प्रतीत नहीं हुआ जिसकी उन्होंने अपेक्षा और चाहत की थी। उन्होंने एक ऐसे राजा और राज्य की अपेक्षा की थी जो कि रोम को उखाड़ फेंकेगा और यहूदियों को रोमी अत्याचार से मुक्त करेगा। जब यीशु ने वैसा राजा बनने में कोई रुचि नहीं दिखाई, तो बहुत लोग उसे अपनी पीठ दिखा कर उससे दूर चले गए, जैसा कि हम लूका 17:20-25 और यूहन्ना 6:60-69 में देखते हैं।

और निसंदेह, इस तिरस्कार ने अंत में यीशु की क्रूस पर मृत्यु की ओर अगुवाई की। सुसमाचारों का सबसे बड़ा व्यंग्य यह है कि क्रूस के द्वारा यीशु की मृत्यु एक ही समय में उसके राजत्व के विरुद्ध शत्रुता की चरम सीमा थी और साथ ही उसके राजत्व और राज्य की विजय भी थी। उसका पुनरुत्थान

और स्वर्गारोहण पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर उसके शाही सिंहासन का मार्ग थे। इसी कारण, यीशु ने अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बीच के 40 दिनों का इस्तेमाल अपने चेलों को परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाने के लिए किया, जैसा कि लूका ने प्रेरितों के काम 1:3 में बताया।

मत्ती 28:18 में यीशु ने स्वर्गारोहण से ठीक पहले इस प्रकार कहा :

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (मत्ती 28:18)

परमेश्वर का राज्य उस शुभ सन्देश का मुख्य विषय है जो सुसमाचारों में यीशु के जीवन की घटनाओं को एक साथ बांधता है। सुसमाचार उस शुभ सन्देश को बताता है कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया है; और उसका राज्य यीशु में आ चुका है। और यीशु का जयवंत जीवन हमें आश्वस्त करता है कि एक दिन वह अपने राज्य को पूरा करने पुनः आएगा, हमें सम्पूर्णता में उसकी आशीषें प्रदान करेगा।

भिन्नता

इस अध्याय में अब तक हमने सुसमाचारों को उनकी साहित्यिक विशेषता के आधार पर देखा है, कलीसिया में उनके स्तर को देख लिया है और उनकी एकता पर भी चर्चा कर ली है। अब हम उस भिन्नता के बारे में बात करेंगे जो उन्हें एक-दूसरे से भिन्न करती है।

जैसा कि हम देख चुके हैं, चारों सुसमाचार परमेश्वर के राज्य के आगमन के बारे में समान कहानी बताते हैं, परन्तु प्रत्येक इसे अपने ही रूप में बताता है। हम दो मुख्य रूपों में इस भिन्नता की खोज करेंगे। पहला, हम सुसमाचार के विवरणों में सामंजस्य स्थापित करने में आने वाली प्रत्यक्ष कठिनाइयों को देखेंगे। और दूसरा, हम प्रत्येक सुसमाचार के भिन्न महत्व को देखेंगे। आइए, प्रत्यक्ष कठिनाइयों के साथ आरंभ करें।

प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ

जब हम सुसमाचारों को पढ़ते हैं, तो तीव्र प्रभाव हम पाते हैं वह यह है कि वे एक-दूसरे के कितना समान हैं। परन्तु ऐसे कई स्थान हैं जहाँ सुसमाचार के वर्णन भिन्न-भिन्न बातें कहते प्रतीत होते हैं। निसंदेह, इनमें से अधिकांश भिन्नताएँ इतनी सूक्ष्म हैं कि उन्हें गंभीरता के साथ विरोधाभास नहीं कहा जा सकता। परन्तु कुछ भिन्नताएँ अवश्य पाठकों को परेशान करती हैं। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उन कुछ महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष कठिनाइयों पर ध्यान दें।

घटनाक्रम

सबसे आम भिन्नताएँ घटनाक्रम से संबंधित हैं, अर्थात् उस क्रम से जिनमें घटनाओं का वर्णन भिन्न सुसमाचारों में किया गया है।

जीवनकथा के विवरणों के रूप में प्रत्येक सुसमाचार एक जैसी आधारभूत समय-रेखा का अनुसरण करता है। प्रत्येक यीशु के जन्म से आरंभ होती है, और उसकी मृत्यु की ओर बढती है, और अंत में उसके पुनरुत्थान की ओर। परन्तु वे यीशु के जीवन की अन्य घटनाओं का वर्णन भिन्न क्रम में करते हैं। इसका कारण यह है कि सुसमाचार कभी-कभी अपनी प्रमुखताओं के अनुसार घटनाओं को एक साथ जोड़ते हैं जो कि पहली सदी में स्वीकारयोग्य था, परन्तु शायद वर्तमान की अपेक्षाओं को पूरा न करे। सटीक रूप से घटनाक्रम का अनुसरण करने की अपेक्षा सुसमाचार कभी-कभी विषय या भौगोलिक

स्थिति के अनुसार अपने वृतांतों को बताते हैं। उदाहरण के तौर पर, मरकुस ने मरकुस 6:1-6 में यीशु के अपने ही गृहनगर में निरादर पाने की कहानी बताई। परन्तु लूका ने अपने विवरण में इसे पहले रखा, लूका 4:14-30 में, जिससे कि यह यीशु की सार्वजानिक सेवकाई की पहली कहानी बनी। लूका का सुसमाचार इस कहानी को मरकुस से अधिक प्रमुखता देता है। और यह निरादर के विषय पर अधिक बल देने के लिए कहानी के लम्बे संस्करण को दर्शाता है।

सुसमाचार लेखकों की इसमें बहुत ही कम रुचि थी कि वे यीशु की सेवकाई के सटीक क्रमानुसार घटनाक्रम को बताएं, इसकी अपेक्षा वे उसकी शिक्षाओं और कार्यों में राज्य के आगमन को स्पष्टता के साथ बता रहे थे।

विलोपन

दूसरे प्रकार की भिन्नता एक या अधिक सुसमाचारों में विवरणों का लोप या अनुपस्थिति है। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना अपने सुसमाचार में प्रभु-भोज के संस्कार का उल्लेख नहीं करता। इस प्रकार के विलोपों को कई रूपों में समझा जा सकता है। ये शायद भिन्न लेखकों द्वारा दिए जाने वाले महत्वों के फलस्वरूप हो सकते हैं। या फिर यह इसके फलस्वरूप भी हो सकता है कि शायद बाद के सुसमाचार लेखकों ने उन भागों को दोहराने की जरुरत महसूस नहीं की जो पहले के सुसमाचार लेखकों की पुस्तकों में उपस्थित थे। चाहे जो भी कारण हो, विलोपनों का अर्थ सुसमाचार लेखकों के बीच असहमतियां या विरोधाभास नहीं है।

आप अपनी किसी वार्तालाप के बारे में सोचें, जिसमें अनेक लोग शामिल रहे हों। हर व्यक्ति को वह सब दोहराने की जरुरत नहीं होती जो अन्य लोग पहले से कह चुके हैं। इसकी अपेक्षा, हरेक व्यक्ति अपने ख़ास दृष्टिकोण को डालने पर ध्यान देता है, शायद कुछ नए विवरणों और शायद भिन्न महत्व के साथ।

पवित्रशास्त्र समय-समय पर इसे प्रत्यक्ष रूप से करता है। उदाहरण के तौर पर, 2 इतिहास 9:29 में, इतिहासकार ने प्रत्यक्ष रूप से कहा कि वह उन विवरणों को नहीं रख रहा है जिनका वर्णन अन्य लेखकों ने पहले से ही कर दिया है। 2 इतिहास में तीन अन्य बार ऐसा ही होता है, और 1 राजा और 2 राजा की पुस्तकों में भी प्रायः ऐसा होता है। अतः, यह देखना आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए कि किसी एक सुसमाचार लेखक ने उन महत्वपूर्ण विवरणों को नहीं दर्शाया जिनका उल्लेख अन्य लेखकों ने पहले से ही कर दिया था।

भिन्न घटनाएँ

एक तीसरे प्रकार की प्रत्यक्ष कठिनाई यीशु मसीह की सेवकाई में घटी भिन्न घटनाओं में पाई जाने वाली समानताओं से आती है। कहने का अर्थ यह है कि कभी-कभी दो सुसमाचार समान घटना को भिन्न रूपों में दर्शाते प्रतीत होते हैं, परन्तु वे वास्तव में शायद दो एक जैसी परन्तु भिन्न घटनाओं को दिखाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु एक भ्रमणशाली प्रचारक था। अर्थात्, वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करता रहा। उसने कई अलग-अलग स्थानों में कई एक जैसे चमत्कार किये, कई लोगों को चंगा किया जो अंधे या लंगड़े थे। और निसंदेह, यीशु ने एक ही जैसे कई प्रश्नों और चुनौतियों का बार-बार उत्तर दिया।

इसके अतिरिक्त, कई भिन्न अवसरों पर लोगों ने समान रूपों में यीशु को प्रत्युत्तर दिया। लूका 7:36-50 और मरकुस 14:3-9 में यीशु का अभिषेक करने के विवरणों पर ध्यान दीजिए। लूका में, यीशु एक फरीसी के घर में है, परन्तु मरकुस में वह शिमोन कोढ़ी के घर में है। यह एक ही घटना के दो विरोधाभासी विवरण नहीं हैं। बल्कि, वे दो भिन्न घटनाओं के विवरण हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भिन्न कथन

चौथे प्रकार की प्रत्यक्ष कठिनाई समान बातों के भिन्न कथनों द्वारा उत्पन्न किया गया असमंजस है।

इसका सबसे सर्वोत्तम ज्ञात उदाहरण मत्ती 5:1-7:29 के यीशु के पहाड़ी सन्देश, और लूका 6:17-49 में लूका द्वारा दर्शाई गई समान शिक्षाएं हैं। मत्ती 5:1 में. हमें बताया गया है कि यह घटना एक पहाड़ी पर घटी। परन्तु, लूका 6:17 में हमें बताया गया है कि यह घटना एक समतल मैदान में घटी।

इस समस्या से निपटने के कम से कम तीन तरीके हैं। पहला, मत्ती और लूका दोनों शायद एक ही समय और स्थान पर दिए गए एक ही सन्देश के बारे में बात कर रहे हैं। गालील की झील की दक्षिण-पश्चिम दिशा में ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी नहीं है, परन्तु झील से उठने वाली लहरदार पहाड़ी है। इस उठे हुए स्थान में कई ऐसे छोटे-छोटे भाग भी हैं जो कि काफी समतल हैं, अतः एक ही स्थान को मत्ती के समान पहाड़ी कहा जा सकता है और लूका के समान मैदानी कहा जा सकता है। दूसरा, यह मिश्रित कथनों, अर्थात् यीशु मसीह द्वारा भिन्न अवसरों पर कही गई बातों को एक सन्देश में समाहित करने, की रचना करने की प्राचीन रीति का एक उदाहरण हो सकता है। यह वह तकनीक है जिसका प्राचीन इतिहासकारों ने भी इस्तेमाल किया और यह ईमानदारी या विश्वसनीयता के बारे में कोई प्रश्न नहीं उठाती। तीसरा, यह भी संभव है कि यीशु ने दो भिन्न दिनों में, दो भिन्न स्थानों- एक पहाड़ी और एक मैदान- में, दो बहुत ही समान संदेशों का प्रचार किया हो। यीशु की सेवकाई की शैली के कारण यह मान लेना निश्चित रूप से तर्कसंगत है कि यीशु ने अपनी कई शिक्षाओं को उन नए श्रोताओं के समक्ष दोहराया था जो उनसे अपरिचित थे।

सुसमाचारों में सांमजस्य बैठाने में भिन्न तरीकों पर ध्यान देने के द्वारा, हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु के जीवन और सेवकाई की उनकी संगठित गवही सच्ची है। हाँ, विवरणों में भिन्नताएँ अवश्य हैं। और जब हम यह पाते हैं कि यीशु ने भिन्न अवसरों पर एक ही बात को सिखाया, तो हम उसकी सेवकाई और उसके सन्देश की निरंतरता को देख सकते हैं, और हमारे जीवनों में उसकी शिक्षाओं को लागू करने के भिन्न तरीकों को पा सकते हैं।

आलेखों में प्रत्यक्ष कठिनाइयों के बारे में पूछने के द्वारा हमने चारों सुसमाचारों में भिन्नता को देखते हुए आरंभ किया था। अतः, इस बिंदु पर हम उनके भिन्न महत्वों की जांच करने के द्वारा चारों सुसमाचारों की भिन्नता को और भी अधिक देखने के लिए तैयार हैं।

भिन्न प्रभाव

क्योंकि प्रत्येक सुसमाचार एक भिन्न लेखक के द्वारा लिखा गया जिसने यीशु के जीवन और सेवकाई के अपने विवरण में अपने दृष्टिकोण और विषयों को डाला, इसलिए चारों सुसमाचारों में भिन्नताएं पाई जाती हैं। यह जानने से कि चारों सुसमाचार पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा-प्राप्त हैं, हम इस बात के प्रति आश्वस्त हैं कि हर विवरण त्रुटिरहित हैं और इसलिए दूसरे विवरणों का विरोधाभासी नहीं है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उनमें कोई भिन्नताएँ नहीं हैं। पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों के व्यक्तित्वों, रूचियों और सेवकाई की परिस्थितियों का इस्तेमाल उन भिन्नताओं को आकार देने के लिए किया। अतः, यदि हम उन सारे रूपों में आशीष पाना चाहते हैं जिनमें पवित्र आत्मा हमें आशीषित करना चाहता है तो हमें सुसमाचारों को पढ़ते समय प्रत्येक सुसमाचार के भिन्न प्रस्ताव पर ध्यान देना होगा।

जीवन की अनेक परिस्थितियों में, हम पाते हैं कि भिन्न लोग भिन्न रूपों में समान सत्य के बारे में बात करते हैं। जिस किसी ने छोटे बच्चों को खेलते हुए देखा है, वह जानता है कि एक ही घटना की अनेक, संगत व्याख्याएँ हो सकती हैं। हर बच्चे का अपने द्वारा खेले गए खेलों के प्रति अपना दृष्टिकोण होता है। खेलों के बारे में उन सबको सुनने के बाद ही हम पूरी तस्वीर को जोड़ सकते हैं कि वास्तव में क्या हुआ था। कोई खिलोनों के रंगों के बारे में उत्साही हो सकता है। दूसरा शायद उनके द्वारा की जाने

वाली आवाज़ को बताने में रुचि रखता हो। और अन्य कोई उस खिलोने के इधर-उधर भागने का उत्तेजना के साथ वर्णन करता हो। ये भिन्न दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधाभासी नहीं हैं। परन्तु वे अवश्य दर्शाते हैं कि हर बच्चे ने खेलों के कुछ भागों को दूसरे भागों अधिक रूचिकर पाया।

इसी प्रकार, प्रत्येक सुसमाचार लेखक की अपनी रूचियां और अपने विषय सुसमाचार की कहानी के उसके अपने विवरण में झलकते हैं। कोई दो विवरण ठीक एक जैसे प्रतीत नहीं होते। नए नियम की सारी सुसमाचार कहानियां एक ही यीशु का वर्णन करती हैं, परन्तु वे प्रायः भिन्न रूपों में उसके बारे में बात करती हैं और उसकी सेवकाई के भिन्न पहलुओं को विशिष्टता से दिखाती हैं।

> हमारे पास चार सुसमाचार हैं, परन्तु यीशु एक है। हमें इससे क्या समझना चाहिए? सबसे पहले, यह आरंभिक मसीहियों की इस बात को पहचानने की बुद्धिमता है कि यीशु इतना जटिल ऐतिहासिक व्यक्ति था कि उसे एक ही तस्वीर में नहीं ढाला जा सकता। सुसमाचार तस्वीरों के समान हैं, इसलिए उन चारों अधिकृत सुसमाचारों में यीशु को ही चित्रित किया गया है, परन्तु इसके साथ-साथ वे भिन्न तरीकों में यीशु के चरित्र में घटनाओं के विभिन्न कोणों को दर्शाते हैं। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ, यूहन्ना के सुसमाचार में, हमारे पास कोई दृष्टांत नहीं है और न ही दुष्टात्मा को निकालने का कोई वर्णन है। मरकुस के सुसमाचार में, दृष्टान्तों के द्वारा यीशु का चरित्र-चित्रण किया गया है, और मरकुस के सुसमाचार के आरंभिक भाग में सबसे अधिक दर्शाया गया चमत्कार दुष्टात्माओं को निकलना ही है। ये सब अलग-अलग तस्वीरें हैं परन्तु फिर भी यीशु एक ही है। और प्रत्येक सुसमाचार लेखक का यीशु के बारे में थोडा अलग-अलग दृष्टिकोण है। इस भाव में नहीं कि एक सोचता है कि वह मसीह है और दूसरा सोचता है कि नहीं है, परन्तु इस भाव में कि उनके महत्व भिन्न हैं कि वे कैसे दर्शाएं कि यीशु ही यहूदी मसीहा है और इसके साथ-साथ पूरे संसार का उद्धारकर्त्ता भी। और इसलिए उन्होंने स्वतंत्रता को महसूस किया, और पवित्र आत्मा की प्रेरणा में उनके पास यह आज़ादी थी कि वे यीशु की सेवकाई के भिन्न पहलुओं और भिन्न भागों, और प्रश्नों को रखने और उनके उत्तर देने के भिन्न तरीकों को महत्व दें।
>
> डॉ. बेन विदरिंगटन

सुसमाचारों की अनेक भिन्न-भिन्न विशेषताएं और विषय हैं। परन्तु इस परिचयात्मक अध्याय में, हम इस बात पर ध्यान देंगें कि प्रत्येक सुसमाचार दो प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार देता है : "यीशु कौन है?" और "हम यीशु का अनुसरण कैसे करते हैं?" आइए, यह देखते हुए आरंभ करें कि मत्ती इन महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर कैसे देता है।

मत्ती में यीशु कौन है?

सारे सुसमाचार लेखकों में, मत्ती ऐसा है जो इस बात को बताने में अधिक रुचि रखता है कि यीशु इस्राएल का वह मसीहारुपी राजा है जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी।

जिन जगहों पर मत्ती यीशु के राजत्व का उल्लेख करता है, उनमें से कुछ ये हैं : 2:2 जहाँ मजूसियों ने पूछा कि "यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है" उसे वे कहाँ पा सकते हैं; 7:21-23 जिसमें प्रभु के रूप में यीशु ने कहा कि वह उन सबको स्वर्ग के राज्य में अनुमति नहीं देगा जो उसे "प्रभु" कहते हैं; 20:20-28 जब प्रेरित याकूब और यूहन्ना की माता ने विनती की कि राज्य में उसके पुत्रों को यीशु के साथ उच्च स्थान में विराजमान किया जाए; 25:31-46 जहाँ यीशु ने अंतिम दिन राजा के रूप में उसके न्याय के विषय में एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दृष्टान्त कहा; और 27:37 जहाँ मत्ती ने व्यंग्यात्मक रूप से यह दर्शाया कि रोमी सैनिकों ने क्रूस पर यीशु के सिर के ऊपर एक पट्टिका लगाई जिस पर लिखा था, “यह यीशु है, यहूदियों का राजा।”

अपेक्षा यह की गई थी परमेश्वर का मसीहारुपी राजा पृथ्वी पर परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य को लायेगा। वह इस्राएल को बंधुआई और उसके शत्रुओं से छुड़ाएगा। वह धार्मिकता के साथ राज्य करेगा और शांति एवं खुशहाली को स्थापित करेगा। यीशु ने यह सब किया, परन्तु उसने यह उस प्रकार से नहीं किया जैसे यहूदियों ने अपेक्षा की थी।

मत्ती 5:17 में यीशु के शब्दों को सुनें :

> यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ। (मत्ती 5:17)

यीशु समझ गया था कि उसकी सेवकाई को देखने वाले अनेक यहूदी सोचेंगे कि वह परमेश्वर की व्यवस्था को नष्ट कर रहा था और पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं कर रहा था। इसीलिए उसने पूरी स्पष्टता के साथ कहा कि चाहे ऐसा प्रतीत न होता हो फिर भी वह व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की बातों को पूरा कर रहा था।

केवल इस अनुच्छेद में ही नहीं, बल्कि बार-बार मत्ती ने दर्शाया कि यीशु ने पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के किसी न किसी पहलू को पूरा किया, और इस बात को प्रकट किया कि वास्तव में वही इस्राएल का मसीहारुपी राजा था।

अतः, मत्ती के अनुसार, हम यीशु का अनुसरण कैसे करते हैं? यीशु ने परमेश्वर की व्यवस्था का सिद्धता से पालन किया, परन्तु उसने केवल वही नहीं किया। उसने कहा कि व्यवस्था की भौतिक मांगों को पूरा करना ही पर्याप्त नहीं था। परमेश्वर ने अपनी प्रजा से सदैव इस बात की मांग की है कि वे हृदय से उसकी आज्ञा मानें। सुसमाचार का शुभ-सन्देश यह है कि राज्य आ चुका है, और यह परमेश्वर के लोगों के लिए क्षमा और उद्धार लाया है और इसने हमें नए एवं आज्ञाकारी हृदय दिए हैं। और हमारे परिवर्तित हृदय हमें सामर्थ और प्रेरणा दोनों देते हैं कि हम प्रेमपूर्ण, आभारी, आनंदित आज्ञाकारिता के साथ यीशु का अनुसरण करें।

> जब हम हृदय से परमेश्वर का अनुसरण करने की बात करते हैं, तो हृदय सब चीजों को समा लेने वाला शब्द है। मैं अपने लोगों को सिखाता हूँ कि यह सिर से शुरू होकर हृदय तक जाता है और वहां से हाथ तक। हमें इसी प्रकार उसकी आज्ञा माननी है और उससे प्रेम करना है। सिर कल्पना का स्थान है, अर्थात् हमारे मन का स्थान, और हमें हमारे पूरे मन से परमेश्वर से प्रेम करना है। हमें हमारे सारे अनुराग से परमेश्वर से प्रेम करना है। और हमें हमारे सारे हाथों और पांवों से परमेश्वर से प्रेम करना है। अतः, हृदय का अर्थ केवल वही नहीं है जो आपके सीने में धडकता है। यह सबको समाहित करने वाला शब्द है। अतः, क्या हम केवल बाहरी रूप से परमेश्वर से प्रेम करते हैं? हाँ, हम वास्तव में करते हैं। परन्तु हमारे अनुरागों से भी हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। हम सब चीजों से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और मैं मानता हूँ कि शब्द “हृदय” उन सब चीजों को दर्शाता है।
>
> डॉ. मैट फ्रीडमैन

हम यहाँ पर देख चुके हैं कि किस प्रकार मत्ती का सुसमाचार हमारे दो प्रश्नों का उत्तर देता है, आइए अब देखें कि मरकुस क्या कहता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मरकुस में यीशु कौन है?

पहले, मरकुस के अनुसार, यीशु कौन है? अपने पूरे विवरण में मरकुस ने बल दिया कि यीशु परमेश्वर का दुःख उठाने वाला पुत्र था जिसने परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। मरकुस ने यीशु के चमत्कारों के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये और उनके द्वारा दुष्ट की शक्तियों पर उसकी सामर्थ को दर्शाया। यद्यपि, मरकुस, मत्ती और लूका के सुसमाचारों से काफी छोटा है, फिर भी लगभग उतने ही चमत्कारों का वर्णन करता है- जो कि सब मिलकर अठारह हैं।

मरकुस के सुसमाचार के आरंभ से ही, हम देखते हैं कि यीशु विजय प्राप्त करने वाला और दुःख उठाने वाला परमेश्वर का पुत्र है। अपने पहले ही अध्याय में, यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु के आगमन की भविष्यवाणी की, और तब यीशु ने अपनी सार्वजानिक सेवकाई आरंभ की। उसका बपतिस्मा हुआ, जंगल में उसकी परीक्षा हुई, उसने अपने पहले चेलों को बुलाया, दुष्टात्माओं को निकाला, और अनेक बिमारियों से लोगों को चंगा किया। बहुत तेजी से चलनेवाले और रोमांचभरे इस विवरण को केवल सतही रूप से पढना इस बात को दिखाता है कि यीशु परमेश्वर के राज्य के शत्रुओं पर सामर्थ के साथ विजय प्राप्त कर रहा था। एक गहन अध्ययन यह भी दिखाता है कि मरकुस ने यीशु को उसकी सेवकाई के आरंभ से ही परमेश्वर के दुःख उठाने वाले पुत्र के रूप में चित्रित किया था।

उदाहरण के तौर पर, मरकुस 1:12-13 में हम यीशु के बपतिस्मा के बाद इस विवरण को पढ़ते हैं :

> तब आत्मा ने तुरन्त उस को जंगल की ओर भेजा। और जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उसकी परीक्षा की; और वह वनपशुओं के साथ रहा; और स्वर्गदूत उसकी सेवा करते रहे। **(मरकुस 1:12-13)**

अपनी सार्वजानिक सेवकाई के पहले चरण में ही यीशु ने शैतान के आक्रमणों का सामना किया था। और दुःख उठाने वाले सेवक के रूप में यीशु का यह चित्रण उसके सताव और उसकी उपेक्षा के साथ मरकुस के सुसमाचार में बढ़ता चला गया।

अतः, मरकुस के अनुसार हमें दुःख उठाने वाले विजेता, यीशु का अनुसरण कैसे करना चाहिए? एक ओर, मरकुस का सुसमाचार मसीही जीवन को एक सरल जीवन के रूप में नहीं दर्शाता है। मरकुस ने शिष्यता या चेलेपन का वर्णन कठिन और प्रायः निराशायुक्त प्रक्रिया के रूप में किया है, जिसमें हम न केवल दुःख उठाते हैं बल्कि गलतियाँ करते और असफल भी होते हैं। वास्तव में, मरकुस के सुसमाचार की एक मुख्य विशेषता यह है कि कितनी बार यीशु के चेले उसे समझने में या विश्वास के साथ प्रत्युत्तर देने में असफल हो जाते हैं। मरकुस 4:40 में यीशु ने इस बात पर आश्चर्य किया कि उसके चेलों में बिलकुल भी विश्वास है या नहीं; 6:52 में, चेलों के “ह्रदय कठोर हो गए थे,”; 7:18 में, यीशु ने अपने चेलों पर “नासमझ” होने का दोष लगाया क्योंकि वे उसकी शिक्षा को नहीं समझ पाए थे; 9:18 में, चेले एक दुष्टात्मा को नहीं निकल पाए; 9:38-41 में चेलों ने गलती से एक दुष्टात्मा को निकलनेवाले को रोकने का प्रयास किया क्योंकि वे उसे नहीं जानते थे; और अध्याय 14 में, एक चेले ने यीशु को अधिकारियों के हाथ पकडवा दिया, एक ने यीशु के साथ अपने पूरे संबंध का इनकार कर दिया, और अन्य चेलों ने उसे छोड़ दिया।

मरकुस के सुसमाचार का यह महत्व हमें यीशु का अनुसरण करने के बारे में कम से कम दो बातें सिखाता है। पहला, चेलों के समान, हम हमेशा यीशु को समझ नहीं पाएँगे। वास्तव में, हम बाइबल की अनेक बातों को गलत रूप में समझ लेते हैं। अतः, हमें इतना दीन होने की आवश्यकता है कि हम इस बात को पहचान लें कि हम सबको बहुत कुछ समझना अभी बाकी है। इसी के भाग के रूप में, हमें विश्वास के साथ बाइबल की शिक्षाओं को ग्रहण करना है, और यह जानना है कि परमेश्वर का वचन सच्चा है, फिर चाहे वह हमें विचित्र या गलत प्रतीत होता हो।

और दूसरा, कठिनाईयां और दुःख मसीहियों के लिए अपरिहार्य हैं। उसका अनुसरण करने से मोड़ने वाले बहुत सारे खतरे और परीक्षाएं हैं।

सुनिए यीशु ने मरकुस 8:34-35 में क्या कहा :

> जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। (मरकुस 8:34-35)

यीशु ने सिखाया था कि हमें उसके प्रति अपने समर्पण में विश्वासयोग्य रहना है। हमें यीशु के समान दुःख उठाने, परीक्षाओं और आत्मिक आक्रमणों के विरुद्ध स्थिर रहने के लिए तैयार रहना है। परन्तु इस अनुच्छेद में एक और बात पर ध्यान दें : यीशु परमेश्वर का केवल दुःख उठाने वाला पुत्र ही नहीं है; वह परमेश्वर का विजय प्राप्त करने वाला पुत्र भी है। वास्तव में, वह अपनी दुःख सहने वाली मृत्यु के द्वारा ही विजय प्राप्त करता है। और यदि हम राज्य के लिए दुःख उठाने में विश्वासयोग्यता के साथ उसका अनुसरण करते हैं, तो हम अनन्त जीवन के साथ पुरस्कृत किए जाएँगे।

> दुःख उठाने में हमारी आँखों को उन बातों पर केन्द्रित करने का प्रभाव है जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं, और पीड़ा के कारण यह अनुभव कराने का भी प्रभाव है कि यही सब कुछ नहीं है। मेरा जीवन इससे कहीं महान लक्ष्य के लिए है, और मैं इनके बीच अभी भी परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मसीह में मेरे पास जो है उसकी वास्तविकता, मेरे आराम, मेरी सुरक्षा, मेरी ख़ुशी और मेरे प्रियजनों से कहीं बढ़कर है।

डॉ. जॉन मैककिन्ले

> यीशु एक दुःख उठाने वाले सेवक के रूप में आया। और जो कोई यीशु का अनुसरण करता है उसे अपने जीवन में दुःख उठाने को स्थान देना जरुरी है। जब हम इस संसार में आते हैं जो दुखों से भरा हुआ है उसमें यह हमारे लिए यीशु के अस्तित्व का एक भाग ही है। यदि हमें यीशु की सेवकाई का भाग बनना है तो हमें हमारे जीवनों में दुखों को स्थान देना होगा। न केवल हमारे अपने दुःख, बल्कि दूसरों के दुखों को भी स्थान देना होगा, कि हम उनके साथ शोकित हो सकें जो शोकित हैं, और अपने जीवनों में उनके दुखों को शामिल कर सकें, और उस सन्दर्भ में उसके भाग बन जाएँ और उसमें सेवा करें। और जब हम दुःख उठाने और इस पहचान, जो कि मसीह का अनुसरण करते हुए परमेश्वर हमारी सेवा से चाहता है, के साथ इस संसार में प्रवेश करते हैं, तो हम परमेश्वर के हृदय को समझना आरंभ करते हैं। और तब परमेश्वर हमें शुद्ध करता है। यह दुःख चरित्र को उत्पन्न करता है, यह आशा को उत्पन्न करता है, धीरज के साथ आगे बढ़ने को उत्पन्न करता है। और इसलिए, हम दुखों के बीच में हमारे जीवन में परमेश्वर को हमें शुद्ध करते हुए देख सकते हैं।

डॉ. के. एरिक थोनेस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मत्ती और मरकुस को मन में रखते हुए, आइए देखें किस प्रकार लूका यीशु और उसके अनुयायियों के बारे में हमारे प्रश्नों का उत्तर देता है।

लूका में यीशु कौन है?

लूका का सुसमाचार "यीशु कौन है," के प्रश्न का उत्तर यह घोषणा करने के द्वारा देता है कि वह संसार का करुणामय या तरस खानेवाला उद्धारकर्त्ता है। यीशु ने अमीरों और गरीबों, धार्मिक अगुवों और सामाजिक रूप से पिछड़ों को एक समान रूप से परमेश्वर का उद्धार प्रदान किया। यीशु का शुभ सन्देश सब लोगों के लिए था- अलक्षित और तुच्छ समझे जाने वालों के लिए भी। लूका ने कई रूपों में इस पर बल दिया। यीशु ने मरियम और मारथा नामक बहनों को ऐसे समय में सम्मान दिया जब बहुत से पुरुष स्त्रियों को तुच्छ समझते थे। लूका ने ऐसे दृष्टान्तों और विवरणों को दर्शाया जिन्होंने स्त्रियों, बीमारों, लंगड़ों, और गैर-यहूदियों को भी प्रशंसा और अनुसरण के योग्य ठहराया। यीशु ने उस विधवा की प्रशंसा की जिसने अपने जीवन की सारी बचत मंदिर में दे दी। लूका ने तुच्छ माने गए चुंगी लेने वाले जक्कई की कहानी बताई, जिसका यीशु के प्रति प्रत्युत्तर लूका के पाठकों के लिए एक नमूना बन गया। बार-बार, लूका ने उन लोगों के प्रति यीशु की परवाह का वर्णन किया जिन्हें समाज ने ठुकरा दिया था या उपेक्षित कर दिया था।

एक उदाहरण के तौर पर, लूका 7:12-16 में इस वर्णन को सुनें :

> जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी... उसे देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से कहा; मत रो। तब उस ने पास आकर, अर्थी को छुआ; और उठाने वाले ठहर गए, तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ। तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा। उसने उसे उसकी माँ को सौंप दिया। इससे सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपादृष्टि की है। (लूका 7:12-16)

पहली सदी के रोमी संसार में, एक विधवा जिसने अपने पुत्र को खो दिया हो तो उसके पास अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए कुछ भी नहीं रहता था, और न ही काम मिलने का कोई अवसर उसे मिलता था। उसके लिए यीशु के तरस पर बल देते हुए, लूका ने दर्शाया कि उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रभु का कार्य गरीबों और असहायों के लिए था। इस वर्णन के अंत में जैसे लोगों ने टिपण्णी की, जरुरतमंदों और निसहायों के प्रति यीशु की सेवा इस बात का प्रमाण थी कि परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करने आया है।

फिर, लूका दूसरे प्रश्न का उत्तर किस प्रकार देता है : हम यीशु का अनुसरण कैसे करें? गरीबों के लिए लूका की परवाह को देखते हुए, एक काम हम कर सकते हैं कि हम दूसरों पर तरस खाएं। हमें गरीबों की देखभाल करनी चाहिए, एवं उनकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। हमें उनकी सहायता के लिए हमारी संपत्ति, भोजन, धन और समय देने के लिए तैयार रहना चाहिए। वास्तव में, जरुरतमंदों की प्रार्थनाओं के उत्तर में परमेश्वर प्रायः दानी मसीहियों को भेजता है। जैसा कि लूका ने 12:33 में कहा :

> अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। (लूका 12:33)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जब हम उसके लोगों की देखभाल करने के द्वारा विश्वासयोग्यता के साथ यीशु का अनुसरण करते हैं, तो वह एक अनन्त मीरास के साथ हमें पुरस्कृत करता है।

यीशु का अनुसरण करने का एक अन्य तरीका इस प्रतिज्ञा में विश्राम करना है कि परमेश्वर हमारी जरूरतों को भी पूरा करेगा।

लूका 12:22-31 में यीशु के शब्दों को सुनें :

> अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे... और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो... परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी। **(लूका 12:22-31)**

परमेश्वर के राज्य के सदस्य होने के नाते, हम इस बात में आश्वस्त हो सकते हैं कि हमारा महान राजा यीशु मसीह हमारा ध्यान रखेगा और हमारी जरूरतों को पूरा करेगा।

और उद्धारकर्त्ता पर विश्वास करने का यह महत्व लूका के सुसमाचार के दो अन्य विषयों से बहुत ही घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है, वे विषय हैं- शांति और आनन्द। उदाहरण के तौर पर, लूका के सुसमाचार के आरंभ के पास ही, लूका 2:10-14 में, हम स्वर्गदूत की ओर से इस घोषणा को सुनते हैं :

> मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ... आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर... शान्ति हो। **(लूका 2:10-14)**

और बाईस अध्यायों के बाद, लूका ने अपने सुसमाचार का अंत ठीक वैसे ही किया जैसा उसने आरंभ किया था। अपनी कहानी के अंत में, चेले यीशु का अनुसरण कर रहे थे और उस आनन्द का अनुभव कर रहे थे जिसकी भविष्यवाणी अध्याय 2 में की गई थी।

> यूहन्ना 20 में उस वार्तालाप में तीन बार यीशु कहते हैं, "तुम्हे शांति मिले।" और मैं नहीं सोचता कि वह कह रहा था सलाम। मैं सोचता हूँ कि वह कह रहा था कि यही वास्तविकता का आधार है। यद्यपि, तुम अभी-अभी पीड़ा से होकर गुजरे हो, तुमने उसे खो दिया जिससे तुम प्रेम करते हो, और तुम्हें पता भी नहीं कि मैं वापिस आने वाला था, जल्द ही तुम रोमियों की तानाशाही के अधीन हो जाओगे, तुम अत्याचार में रहे हो, यह और भी अधिक कठिन होने वाला है, मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि मैं यहाँ हूँ, और जब मैं यहाँ हूँ, तो मैं एक आधारभूत शांति लाता हूँ। मैं तुम्हारा आनन्द हूँ। इसलिए चाहे जो भी हो जाए, तुम्हारे भौतिक जीवन में चाहे जो भी हो जाए, तुम्हारे जीवन के भीतर चाहे जो कुछ भी क्यों न हो, यदि तुम मुझे जानते हो, वहीँ सच्ची शांति का सोता है। बाइबल का एक शब्द है, "शालोम," यह सम्पूर्ण धर्मी राज्य और परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर वास करे चाहे कैसी भी विपरीत अवस्था क्यों न हो। और मैं आनन्द लेकर आता हूँ, मैं यहाँ पर केवल तुम्हें शांत करने के लिए नहीं हूँ, मैं यहाँ पर तुम्हें वास्तविक आनन्द देने के लिए हूँ, ऐसा आनन्द जो भावना से परे है। वह आनन्द जो एक सकारात्मक समझ है कि सारा संसार मेरे नियंत्रण में है, और यीशु कहता है कि मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगा, सब कुछ पहले मुझसे होकर जाएगा। पौलुस जिस प्रकार से आत्मा के फल के बारे में बात करता है, वह मुझे बहुत पसंद है। वह कहता है कि जब पवित्र आत्मा मसीहियों के जीवनों को भरने के लिए आता है, तो आप सब उससे बहुत प्रेम करेंगे; अगला शब्द है, आप में आनन्द होगा। और मैं सोचता हूँ कि वे दोनों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> अवियोज्य हैं। निसंदेह वह छः और बातों को जोड़ता है, परन्तु मुख्य बात यह है कि जब परमेश्वर को मेरे हृदय में डाला या उंडेला जाता है, तो प्रत्युत्तर यह आता है, तब मैं वास्तविकता की अपनी समझ के साथ जीता हूँ, जो कि शायद काफी दोषदर्शी, काफी निराशावादी, काफी नकारात्मक होगी। परन्तु जब यीशु उपस्थित होता है, तो केवल यही प्रत्युत्तर होता है, मेरे अन्दर शांति है। वह अपने पुनरुत्थान की सामर्थ मेरे जीवन में लाया है, और मेरे भीतर आनन्द है, मेरे पास आशा है, क्योंकि यीशु में कोई पराजय नहीं है। कुछ भी "अलग-थलग" नहीं है। वह सब चीज़ों को एक साथ जोड़ता है, सर्वांगीण रूप से और पूर्ण रूप से।
>
> डॉ. बिल उरी

लूका 24:52-53 में उसके अंतिम शब्दों को सुनें :

> और वे उस को दण्डवत करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए। और लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे। (लूका 24:52-53)

लूका के सुसमाचार में यीशु का अनुसरण करने का अर्थ है हमारे उद्धार में और परमेश्वर की सारी आशीषों में आनंदित होना, शांतिपूर्वक उसमें विश्राम करना, हमारी सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए उस पर विश्वास करना, और दूसरों के पास भी ऐसी ही आशीषें पहुँचाने के लिए इस्तेमाल होने हेतु तैयार रहना।

यह देखने के बाद कि कैसे मत्ती, मरकुस और लूका इन प्रश्नों का उत्तर देते हैं, "यीशु कौन है?" और "हम उसका अनुसरण कैसे करते हैं?" अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि यूहन्ना किस प्रकार इन प्रश्नों का उत्तर देता है।

यूहन्ना में यीशु कौन है?

उसके सुसमाचार में, यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में चित्रित किया जो उद्धार की अनन्त योजना को पूरा करता है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान पर बल देते हुए, यूहन्ना ने पिता के साथ परमेश्वर के अद्वितीय संबंध के बारे में बात की। यीशु अपने पिता का सम्पूर्ण प्रकाशन है और वही एकमात्र है जो उन सबको अनन्त जीवन प्रदान कर सकता है जो उस पर अपना भरोसा रखते हैं। उदाहरण के लिए, जहाँ अन्य तीन सुसमाचारों ने यीशु के जन्म और पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के साथ अपने विवरणों को आरंभ किया, वहीँ यूहन्ना ने अपने सुसमाचार का आरंभ यह कहते हुए कहा कि परमेश्वर का पुत्र पिता के साथ सृष्टि की रचना में शामिल था, और अब पिता अपने एकलौते पुत्र के माध्यम से प्रकट किया जा रहा था।

यीशु द्वारा कहे गए "मैं... हूँ" कथनों के द्वारा यूहन्ना ने एक और तरीके से इस महिमामय सन्देश को बताया। इन कथनों में, यीशु ने परमेश्वर के वाचाई नाम "यहोवा" की ओर संकेत किया। निर्गमन 3:14 में, स्वयं परमेश्वर ने "यहोवा" नाम को स्पष्ट किया जिसका मूल अर्थ "मैं... हूँ" है। यीशु ने यूहन्ना 6:35 में इस नाम की ओर संकेत किया, जहाँ उसने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ।" हम इसे 8:12 और 9:5 में भी पाते हैं, "मैं जगत की ज्योति हूँ।" और 10:7,9 में हम पढ़ते हैं, "द्वार मैं हूँ।" 11:25 में, यह है, "पुनरुत्थान और जीवन में हूँ।" 14:6: में यह है, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।" 15:1 में हम पाते हैं, "सच्ची दाखलता मैं हूँ।" और 8:58 में यीशु ने अंतिम घोषणा की, "मैं हूँ।" इन सारे उदाहरणों में, यीशु ने घोषणा की कि

परमेश्वर के पुराने नियम के पवित्र नाम को धारण करने वाला वही है, और उसने अपने व्यक्तित्व में परमेश्वर को प्रकट किया।

उद्धार की परमेश्वर की अनन्त योजना के केंद्र में यीशु का स्थान यूहन्ना 17 में यीशु की महायाजकीय प्रार्थना में विशेष रूप से प्रकट होता है। सुनिए यूहन्ना 17:24 में यीशु ने क्या प्रार्थना की :

> हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूँ, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा। **(यूहन्ना 17:24)**

यीशु ने अपने अनुयायियों के उद्धार को उस प्रेम के साथ जोड़ा जो पुत्र के लिए पिता के मन में सृष्टि के पहले से था। उसका कहना था कि हमारा उद्धार यीशु के लिए पिता के प्रेम का उंडेला जाना है।

अतः, यदि यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर के ऐसे पुत्र के रूप में चित्रित किया जिसने उद्धार की अनन्त योजना को पूरा किया, तो यूहन्ना का सुसमाचार हमारे दूसरे प्रश्न का उत्तर कैसे देता है? हम यीशु का अनुसरण कैसे करते हैं?

यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु का अनुसरण करने का मुख्य तरीका परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त करना और वैसा ही प्रेम दूसरों के प्रति दर्शाना है। यीशु ने कई तरीकों से हमारे अनुसरण के लिए इस नमूने को स्थापित किया। उदाहरण के तौर पर, हम यूहन्ना 17:23-26 में इसे देखते हैं, जहाँ यीशु ने पुत्र के लिए पिता के प्रेम के बारे में बात की। यह पुत्र के लिए पिता का अनन्त प्रेम ही था जो उस अनन्त योजना के पीछे था जिसे यीशु ने पूरा किया। अतः, यह अर्थपूर्ण है कि यूहन्ना का सुसमाचार प्रेम के द्वारा चारित्रित है। जैसा कि यूहन्ना 13:34-35 में यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा :

> एक दूसरे से प्रेम रखोः जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो। **(यूहन्ना 13:34-35)**

यूहन्ना के अनुसार, हम उसके प्रेम से एक-दूसरे से प्रेम करने के द्वारा यीशु का अनुसरण करते हैं।

इस प्रकार, चेलापन प्रेम में आरंभ होता है और उसी में कार्यरत होता है। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम हमारे चेलेपन को आरंभ करता है। और एक-दूसरे के लिए हमारे माध्यम से परमेश्वर का प्रेम हमारे चेलेपन की अभिव्यक्ति है। यह हमें समझने में सहायता करता है कि क्यों यूहन्ना ने स्वयं को अपने पूरे सुसमाचार में “वह चेला जो प्रेम करता था” के रूप में नहीं बल्कि “वह चेला जिससे यीशु प्रेम करता था” के रूप में प्रकट किया। वह जानता था कि दूसरों से प्रेम करने की जो भी योग्यता उसमें थी वह उसके लिए यीशु के प्रेम की गहराई से आई थी। यीशु के अनुयायियों से पहले प्रेम किया गया था तब उन्हें एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए बुलाया गया था।

> कोई भी यह सोच सकता है कि चारों सुसमाचारों में पाई जाने वाली भिन्नताएँ शायद दर्शाती हैं कि वे परस्पर विरोधी हैं, कि वे विरोधाभासी कहानियां बताते हैं, परन्तु मैं नहीं सोचता कि ऐसा कुछ है। मैं सोचता हूँ कि चारों सुसमाचारों में यीशु की कहानी के चार सांमजस्यपूर्ण दृष्टिकोण पाए जाते हैं। चारों सुसमाचार इस विचार में एकीकृत हैं कि वे हमें इस मनुष्य के इतिहास को बता रहे हैं जो परमेश्वर का देह्धारण है और जो पाप और मृत्यु से पापियों को बचाने के लिए आया है। और प्रत्येक सुसमाचार उस यीशु को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखता है और उसके जीवन के भिन्न विवरणों पर बल देता है, वे सन्देश और दृष्टिकोण विरोधाभासी नहीं हैं, बल्कि सांमजस्यपूर्ण हैं।

डॉ. स्टीव कोवन

उपसंहार

इस अध्याय में, हमें सुसमाचारों के अध्ययन का परिचय कराया गया है। हमने उनके साहित्यिक चरित्रों को देखा है, और यह पाया है कि सुसमाचार विश्वसनीय ऐतिहासिक विवरण हैं। हमने कलीसिया में उनके स्तर पर भी ध्यान दिया है, और यह देखा है कि वे नए नियम के पवित्रशास्त्र के प्रमाणिक भाग हैं। और हमने एक-दूसरे के साथ तुलना में भी उन्हें देखा है, और पाया है कि वे सब परमेश्वर के राज्य की समान कहानी बताते हैं, यद्यपि प्रत्येक सुसमाचार यीशु और चेलेपन को अपने अलग अंदाज में चित्रित करता है।

सुसमाचार को समझना प्रत्येक मसीही के लिए महत्वपूर्ण है। हम इस जीवन का और आने वाले जीवन का हमारा सारा विश्वास यीशु के हाथों में रखते हैं, जिसे हमने कभी आमने-सामने नहीं देखा है। जो कुछ भी हम उसके बारे में जानते हैं वह हम उसके वचन से जानते हैं- विशेषकर सुसमाचारों से। आशा करते हैं कि जो बातें हमने इस परिचयात्मक अध्ययन से सीखी हैं, उन्होंने हमें चारों सुसमाचारों का और अधिक गहराई से अध्ययन करने के लिए तैयार किया है, ताकि हम यह समझ सकें कि कैसे प्रत्येक सुसमाचार का सन्देश हमारे विश्वास और जीवन को प्रभावित करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।